करामाते साबिर रह.
जीवन परिचय
दास्ताने साबिर और
करामाते साबिर रेह.
अनुवादक : मौ० आज़म गुलज़ारी क़ादरी, चिश्ती साबरी
कुतुब खाना गुलजारे साबरी
दरगाह हज़रत साबिर पाक
पीरान कलियर शरीफ

दासतान——और——करामात

साबिर पाक

—यानी—

सवानेह उमरी

हज़रत मख़दूम सय्यद अलाउद्दीन अली अहमद
साबिर पाक कलियरी

—मुरत्तिब—

मुहम्मद आज़म गुलज़ारी क़ादरी चिश्ती साबरी

नाशिर

कुतुब ख़ाना गुलज़ारे साबरी

दरगाह हजरत साबिर पाक पीरान कलियर शरीफ़, यू. पी.

उन्वान सफ़ा नं.

हरफ़े आगाज़ 3
नसब नामा हज़रत साबिर पाक रहमतुल्लाह अलैह 4
विलादत व सआदत और इसके पहले के वाक़ेआत 6
वजह नामे मुबारक व पैदाइश 7
बचपन के वाक़िआत 7
वालिद साहब की वफ़ात 9
तालिम व तरबियत 9
आपकी वालिदा की पाक पट्टन में आमद 10
ख़िदमात तक़सीम लंगर 10
साबेर का लक़ब पाना 12
(रह.) का अक़्द निकाह 13
हज़रत साबिर पाक का बाबा फ़रीद से बैअत होना 14
देहली की वलायत 15
कलियर शरीफ़ की वलायत 16
कलियर शरीफ़ में आमद 17
तर्ज़े रुशद व हिदायात 17
कलियर शरीफ़ में पहली करामत 18
वाक़िअ जामा मस्जिद 19
कलियर की वीरानी 21
हज़रत शम्सुद्दीन का बैअत होना 23
हज़रत साबिर साहब की वसीयत और अताए ख़िरका–ए–ख़िलाफ़त 26
हज़रत साबिर पाक की तजहीज़ व तकफ़ीन 30
हज़रत साबिर पाक की शान व रुतबा 32
हज़रत साबिर पाक के चन्द अक़वाल 32
हज़रत साबिर पाक के जलाल का जमाल में तबदील होना 33
शिजरा सज्जादगान 36
तामीर गुंबद व मस्जिद 37
उर्स मुबारक, मेंहदी डोरी 38
नक़्शा तक़ारीब मय औक़ात व मुक़ाम 39
तक़रीब बारह माह, ख़त्मे ख़्वाजगान 40
शिजरा–ए–तय्यबा चिश्तिया साबिरया 41
हज़रत मख़दूम साहिब के सिलसिला का शिजरा साबिरया 42
तारीख़ वफ़ात 43
नज़राना सलाम व अक़ीदत 44
सलाम 44
इमाम साहब का रौज़ा मुबारक 46
बाबा नरम पोश, इमाम साहब, चिराग़ अली शाह 47

हर्फ़े आग़ाज़

कुरआने करीम का इरशाद है कि अल्लाह के वलियों पर न कोई ख़ौफ़ है और न ग़म और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है कि क़यामत के दिन इन्सान का हश्र उसी के साथ होगा जिस से दुनिया में मुहब्बत होगी गोया हदीस का तक़ाज़ा यह है कि नेकों और वलियों से मोहब्बत की जाए। ताकि दुनिया में इनकी बेहतरीन रहनुमाई से हर किस्म के ख़ौफ़ व मलाल से आज़ादी का ज़रिया हो और क़यामत में इनके साथ खुदा के दरबार में हाज़री अज़ाबे इलाही से निजात का सबब बन जाए। और यह मुहब्बत सिर्फ ज़बानी दावा न हो बल्कि अमली सबूत हो औंर अमली सबूत यह है कि नेकों और वलियों से मुहब्बत का दावा करने वाले इनके नक्शे क़दम पर चलें इनकी पेरवी करें तो यक़ीनन मसाइब व आलाम टल जाऐंगे। सुकून हासिल होगा।

हज़रत सय्यद मख़दूम अलाउद्दीन अली अहमद साबिर पाक रहमतुल्लाह अलैह की ज़ाते गिरामी ऐसी है कि आज हम भी इनकी पैरवी से फ़ेज़ पा सकते हैं। आप ने ५६२ हिजरी में ज़लालत व गुमराही के मन्डलाते हुए बादलों को छांट कर उम्मते मुहम्मदया के दिलों को नूरे ईमानी से मुनव्वर फ़रमायाः– और इस्लाम के मुरझाए दरख़्त को सर सब्ज़ व शादाब करके अपने अक़ीदतमंदों की कामयाबी व तरक्की के ज़ामिन बनने का मक़ाम पाया जैसा कि आप हम सब जानते हैं। कौन ऐसा मुसलमान है जो आपके नामे नामी से वाकिफ़ नहीं होगा। सैकड़ों बरस गुज़र जाने के बावजूद आज भी यह हालत है कि जो शख़्स इख़्लास व ऐतक़ाद से मुसीबत के वक़्त आप (रह.) को याद करता है तो आप (रह.) उसकी मदद फ़रमाते हैं यह सिर्फ दावा ही नहीं बल्कि

रूकावत और रोज़ मर्रह का मुशाहिदा है।

हज़रत मख़्दूम अलाउद्दीन अली अहमद साबिर पाक (रह.) गुमराहों के रहनुमा मुसीबत ज़दों के दस्तगीर और रूहानियत व मारफ़त के रोशन मीनार हैं। दरबारे ख़ुदा वंदी से आप को वह अज़मत व बुर्जगी की दौलत अता हुई है कि बहुत से औलिया–ए–किराम को आप ही के दरबारे फ़ैज़ से रूहानी सरमाया हासिल होता है।

इस मुतबर्रक किताब में हज़रत मख़दूम सय्यद अलाउद्दीन अली अहमद साबिर पाक रहमतुल्लाह अलैह के हालाते ज़िन्दगी के अलावा आप की रौशन तालीमात का अक्स भी शामिल है।

नसब नामा

हज़रत मख़दूम सय्यद अलाउद्दीन अली अहमद साबिर पाक रहमतुल्लाह अलैह

कुतबुल मशाइख़ हज़रत मख़दूम सय्यद अलाउद्दीन अली अहमद साबिर पाक रहमतुल्लाह अलैह के लिए जुम्ला तज़्करा नवीसों की राए है कि आप सही सय्यद थे आप के वालिद का नाम सय्यद अब्दुर्रहीम था जिनका सिलसिला हज़रत इमाम हुसैन से मिलता है और वालिदा साहिबा का हज़रत सय्यद उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहू अन्ह तक पहुंचता है।

हज़रत ख़्वाजा सय्यदना मख़दूम अलाउद्दीन अली अहमद साबिर पाक क़लियरी रहमतुल्लाह अलैह

इब्ने हज़रत सय्यद अब्दुर्रहीम उर्फ़ बदरुद्दीन वली हक़ जाकिर हराती रहमतुल्लाह अलैह

इब्ने हज़रत सय्यद अब्दुल वहाब सैफुद्दीन नूरे हक़ शाकिर

बग़दादी रहमतुल्लाह अलैह

इब्ने हज़रत सय्यदुल सादात मेहबूबे सुब्हानी कुतुबे रब्बानी गौसे सम्दानी हज़रत सय्यद

मुहीयुद्दीन अब्दुल क़ादिर जीलानी पीराने पीर दस्तगीर गौसुल आज़म रहमतुल्लाह अलैह

इब्ने हज़रत सय्यद अब्दुल रहमान मुहम्मद सालेह नूरुद्दीन यासिर जिलानी रहमतुल्लाह अलैह

इब्ने हज़रत सय्यद अब्दुल्लाह ज़हूरुद्दीन अबू अहमद आसिर अरबी रहमतुल्लाह अलैह

इब्ने हज़रत सय्यद अब्दुल वाहिद यहया सय्यद अरबी रहमतुल्लाह अलैह

इब्ने हज़रत सय्यद करीमुल्लाह सय्यद मोरिस ख़ेरुद्दीन मूसा अरबी रहमतुल्लाह अलैह

इब्ने हज़रत सय्यद इनामुल्लाह सय्यद मूसा अरबी रहमतुल्लाह अलैह

इब्ने हज़रत सय्यद सलामतुल्लाह सय्यद सादुल्लाह सईदुद्दीन अरबी रहमतुल्लाह अलैह

इब्ने हज़रत सय्यद अब्दुल्लाह अबुलहसन सय्यदना इमामे आली मुक़ाम हज़रत हसन शाहे दीन व दुनिया रज़ियल्लाह अन्ह

इब्ने हज़रत अमीरूल मोमिनीन सय्यदुल मुरसलीन असदुल्लाहिल ग़ालिब मुर्तज़ा अली मुश्किल कुशा इब्ने अबी तालिब रज़ियल्लाह अन्ह

इसी नस्ब से मालूम हुआ कि आप हज़रत पीराने पीर दस्तगीर सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी रहमतुल्लाह अलैह के पड़पोते हैं।

आप रहमतुल्लाह अलैह की वालिदा माजिदा हज़रत हाजरा

और ... उर्फ़ जमीला खातून हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गंज शक्र रहमतुल्लाह अलैह की हकीक़ी बहन थीं।

विलादत बा सआदत

और इसके पहले के वाक़िआत

रिवायत है कि जिस दिन हज़रत सय्यद अब्दुर्रहीम का निकाह हुआ उस हुजरे में जहां सुन्नते निकाह अदा की गई थी अजीब व ग़रीब किसम की तजल्लियां ज़हूर में आईं। एक नूर जो मिसले याकूत था हज़रत अब्दुर्रहीम रहमतुल्लाह अलैह की पेशानी पर चमक रहा था। और इसी रंग का बादल बारे बार हुजरे की छत से मिलता हुआ मालूम होता था। जिसने तमाम हुजरे वालिदा को खुशबू से मेहका दिया था। बाद में आप यानी हज़रत साबिर पाक रहमतुल्लाह अलैह की वालदा हज़रते हाजरा ख़ातून के कमरे में ख़ुश रंग बादल छाया हुआ रहने लगा। पैदाइश से नो रोज़ पहले हज़रत की वालदा ने अपने पेट से एक आवाज़ सुनी कि मैं ज़हूरुल्लाह हूं।

मुल्के अफ़ग़ानिस्तान में एक शहर हरात है जहां आप रहमतुल्लाह अलैह के वालिदैन ने सकूनत इख्तियार कर ली थी वहां आप की पैदाइश १९ रबीउल अव्वल ५९२ ई॰ बरोज़ जुमेरात को हुई।

हज़रत मख़दूम साबिर पाक रहमतुल्लाह अलैह मादर ज़ाद वली थे। इसी वजह से आप के दुनिया में तशरीफ़ लाते ही अजीब व ग़रीब करामात ज़ाहिर हुई आप की दाया मुसम्मात बसरी बिनते हाशिम का बयान है कि जिस वक़्त आप दुनिया में तशरीफ़ लाए तो मैंने ग़ुसुल देने के लिए आपके जिस्मे मुबारक पर हाथ लगाना चाहा तो फ़ौरन ही हाथों में ना

क़ाबिले बर्दाशत सोज़िश (जलन) पैदा हुई तब मैंने आपकी वालिदा के मशवरे से वुज़ू किया इसके बाद नोमोलूद बच्चे को गुसल दिया। आप की वालदा फ़रमाती हैं कि खुश्बू से घर का कुहना-कुहना महक उठा था और ऐसा मालूम होता था कि पाक रूहें हूरो मलाइक नोज़ोइदा मासूम बच्चे की पेशानी का बोसा लेकर वापिस हो रहीं हैं। और पूरा घर खुश्बू से महक उठा है।

पैदाइश

और नामे मुबारक की वजह

आप की वालिदा साहिबा फ़रमाती हैं कि पैदाइश से पहले एक दिन हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम ख़्वाब में तशरीफ़ लाए और कहा कि होने वाले बच्चे का नाम मेरी निस्बत से अहमद रखना। कुछ दिनों के बाद हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्ह ख़्वाब में ज़ाहिर हुए और फ़रमाने लगे कि इस बच्चे का नाम मेरी निस्बत से अली रखना। फिर आप की पैदाइश के बाद एक बुलन्द पाया बुर्जुग के मकान पर तशरीफ़ लाए और आप को गोद में लिया और पेशानी का बोसा लिया और आप को देखकर बहुत खुश हुए। आप के वालिद माजिद से कहा कि इस बच्चे का नाम अलाउद्दीन रखना इसी निस्बत से आप के वालिद माजिद ने आप का नाम नामी अलाउद्दीन और वालिदा माजिदा ने अली अहमद रखा इसी तरह आपका नाम अलाउद्दीन अली अहमद हो गया।

बचपन के वाक़िआत

पैदाइश के रोज़ से ही आप के चेहराए मुबारक पर सब्र व क़नाअत नुमायाँ थे एक साल तक आप एक दिन दूध पीते तो दूसरे दिन रोज़ा से रहते दूसरे साल आप एक दिन दूध पीते तो दो दिन रोज़े से रहते। इसी तरह आप ने सिर्फ 6 माह तो

दिन वालिदा का दुध पिया तीसरा साल शुरू होते ही आपने दूध पीना ही छोड़ दिया था।

आप जौ या चने की रोटी बराए नाम खा लेते थे। चौथे साल आप की ज़बाने मुबारक खुली तो सबसे पहले जो हज़रत रहमतुल्लाह अलैह की ज़बान से कलिमा निकला वह था लामौजूद इल्लल्लाह (यानी अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं) जब आप की उम्र छः साल की हुई तो आप यतीम हो गए सातवां साल शुरू होने पर आपने पाबन्दी के साथ तहज्जुद पढ़ना शुरू किया। हर वक़्त ज़िकरे इलाही में मसरूफ़ रहते किसी वक्त भी इबादते इलाही से ग़ाफ़िल नहीं रहते। अगर कभी किसी अहले बातिन और रौशन ज़मीर से कोई कलामे इश्के इलाही सुन्ते तो आप पर फ़ौरन वजदानी कैफ़ियत तारी हो जाती थी। आप की वालिदा अक्सर आपसे फ़रमातीं कि बेटा तुम्हारी उम्र अभी इस क़ाबिल नहीं कि इस क़दर मुजाहिदात और मशक़्क़त करो। आप जवाब में फ़रमाते ऐ मादरे मेहरबां किया करूं दिल नहीं मानता हमारी तमन्ना यही है कि राहे हक़ में खुद को फ़ना कर दूँ।

हज़रत साबिर पाक रहमतुल्लाह अलैह के वालिद माजिद का बयान है कि एक दिन सुबह के वक़्त मैंने मुराकबे से आंख खोली तो देखा कि एक सांप के दो टुकड़े पड़े हुए हैं और साबिर पाक वहां बैठे हुए हैं हज़रत साबिर पाक रहमातुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं कि आज से कोई सांप मेरे खानदान के किसी आदमी को नहीं काटेगा। मैंने सांपों के बादशाह को मार डाला है और सब सांपों से वादा लिया है कि वह मेरे खानदान के किसी भी फ़र्द को हर गिज़ नहीं काटेगा।

रिवायत है कि एक दिन घर में फ़ाका था आप ने वालिदा से कहा कि भूख लगी है कुछ खाने को दीजिए मां ने बेटे को

से कहा कि भूख लगी है कुछ खाने को दीजिए मां ने बेटे को तसल्ली के लिए पानी से भरी हुई एक देगची चुल्हे पर रख कर नीचे आग सुल्गा दी और बेटे से कहा कि थोड़ी देर इन्तज़ार करो खाना पक रहा है जब बहुत देर हो गई खाना नही मिला तो फिर वालिदा साहिबा से अर्ज़ किया कि बहुत भूख़ लगी है आप रह॰ ने खुद ही देगची का सरपोश हटाया तो देखा कि खुश्बूदार चावल पके हैं। आप रह॰ की वालिदा को बहुत तअज्जुब हुआ बाद में कुछ चावलों को तबर्रुकन तक़्सीम कर दिया।

वालिद साहिब की वफ़ात

जब हज़रत साबिर पाक रह॰ की उम्र छः साल की हुई तो आप के वालिद माजिद का साया सर से उठ गया आप को सख़्त सदमा हुआ आप एक साल तक ख़ामोश रहे। वालिद माजिद के इंतक़ाल के बाद आप की वालिदा की ज़िन्दगी निहायत गुरबत में बस्र होने लगी। मगर वह अपनी गुरबत का इज़्हार किसी से नहीं फ़रमाती थीं। चौथे पाँचवे रोज़ कुछ नान जो मयस्सर आ जाता था तो आप नोश फ़रमा लेती थीं।

तालीम व तरबियत

आप काफ़ी ज़हीन थे आप रहमतुल्लाह अलैह ने अपने वालिद की ज़िन्दगी में इब्तदाई तालीम शुरू कर दी थी जो बहुत जल्द पूरी हो गई आपके वालिद के बाद आपकी वालिदा ने हज़रत गिरगानी रहमतुल्लाह अलैह से आप को हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गंज शक्र रहमतुल्लाह अलैह के पास ज़ाहिरी व बातिनी तालीम के लिए भेजने का इरादा ज़ाहिर किया हज़रत गिरग़ानी रहमतुल्लाह अलैह इस बात से बहुत खुश हुए

और फौरन इजाज़त दे दी कि अपने भाई हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह के पास ले जाइये।

आपकी वालिदा की पाक पट्टन में आमद

आपकी वालिदा आपको लेकर ६०१ हि० में पाक पट्टन में पहुंचीं, आपकी वालिदा ने अपने भाई फ़रीदुद्दीन से सारी सरगुज़िश्त बयान फ़रमाई और अर्ज़ किया कि आप इस यतीम बच्चे को अपनी गुलामी में ले लें। इस पर बाबा फ़रीदुद्दीन ने फ़रमाया बहन मैं तुम्हारा एहसान मंद हूं मैं खुद इसका मुन्तज़िर था यह बच्चा औलिया अल्लाह के ज़ूमरे में यक़्ता और बेमिसाल होगा। आप भी तीन साल तक रहीं। इसके बाद वापस हरात चली गईं, चलते वक़्त अपने भाई से फ़रमा गईं कि मेरा बच्चा बहुत कम बोलता है और खाने पीने की तरफ़ से निहायत ग़ाफ़िल और लापरवाह है आप खुद इसके खाने का ख़याल रखना। यह बच्चा रोज़े बहुत रखता है शर्म व हया का पुतला है और बहुत ग़ैरतमंद है।

तक़्सीमे लंगर की ख़िदमात

हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह ने हज़रत मख़दूम पाक रहतुल्लाह अलैह को इनकी वालिदा के सामने बुला कर हुक्म दिया कि सुबह से तुम लंगर का इन्तज़ाम और खाना तक़्सीम किया करो यह हुक्म सुनकर साबिर पाक की वालिदा बहुत खुश हुईं। हज़रत बाबा फ़रीद गंज शक्र रहमतुल्लाह अलैह के हुक्म के मुताबिक आपने बखुशी खिदमाते तक़्सीमे लंगर को क़ुबूल किया उस वक़्त आपकी उम्रे शरीफ़ ग्यारह

साल की थी।

इसके बाद रोज़ाना चाशत की नमाज़ के बाद अपने हुज्रे से बाहर तशरीफ़ लाते लंगर तक़्सीम करते और फिर अपने हुज़्रे शरीफ़ में चले जाते और हुजरा का दरवाज़ा बन्द करके तन्हा रहते थे। शाम को बाद मग़रिब लंगर तक़्सीम करते। किसी ने भी हज़रत को तक़्सीमे लंगर के वक़्त या बाद में खाते पीते नहीं देखा आप रहमतुल्लाह अलैह ने यह ख़िदमत बारा साल तक अंजाम दी। मतलब यह है कि आप ने इसी दिन से जिस्मानी गिज़ा बिल्कुल तर्क कर दी थी और आपकी ज़िन्दगी का दारोमदार तमामतर रुहानी ग़िज़ा पर था।

एक मर्तबा का ज़िक्र है कि हज़रत बाबा फ़रीद रहमतुल्लाह अलैह ने आपको आपके हुजरे के अन्दर रोते हुए देखा तो रोने का सबब मालूम किया तो आप रहमतुल्लाह अलैह ने जवाब दिया कि मुझे सलूक के सल्ब हो जाने का ख़ौफ़ है आज से अल्लाह ताला ने मुझे दुनियाए फ़ानी से बिल्कुल ला ताअलुक बना दिया है। आज के बाद रजाल अलग़ैब और औलिया के मासवा कोई मेरे पास नहीं आने पाएगा। लिहाज़ा इस रोज़ के बाद आप रहमतुल्लाह अलैह के हुजर–ए–मुबारक के अन्दर दाख़िल होना तो दरकिनार किसी में इतनी मजाल भी नहीं थी कि आप रहमतुल्लाह अलैह के हुजर–ए–मुबारक के क़रीब भी फटक सकता। इस दिन से आप की दुनिया से बे ताल्लुकी और कूव्वते जज़्ब की शिद्दत बढ़ती चली गई यहां तक कि इस क़दर ज़्यादा हुई कि जिसकी मिसाल मिलना मुश्किल है। आप की कूव्वत–ए–जज़्ब की शिद्दत बयान करते हुए हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन रह. रक़म तराज़ हैं कि एक दिन मेरे लड़के नईमुद्दीन को न जाने क्या सूझी कि वह अपके हुजरे के अन्दर झांकने लगा उसी वक़्त उसे खून की कै हुई और उसने वहीं तड़प

कर जान दे दी। ऐसे ही एक दिन मेरे दूसरे लड़के अज़ीज़ुद्दीन ने आप की इजाज़त के बग़ैर लंगरख़ाने जाकर नाज़िम के मना करने के बावजूद अपने आप लंगर तक़्सीम कर दिया। जब वह लंगर तक़्सीम करके चला गया तो कुछ देर बाद आप लंगर तक़्सीम करने की ग़र्ज़ से लंगर ख़ाने में दाख़िल हुए और नाज़िमे लंगर ख़ाने से कहा कि लाओ लंगर तक़्सीम करें उसपर नाज़िम ने तमाम वाकिया आप के गोश गुज़ार किया इसपर आपने मालूम किया कि ख़ाना बिल्कुल भी तक़्सीम के लिए बाक़ी नहीं है जब यह सुना तो जज़्ब की हालत में अचानक आप के मुँह से निकला क्या वह मूज़ी बाक़ी रह गया? इस जुम्ला का निकलना था कि अज़ीज़ुद्दीन का उसी वक़्त इंतक़ाल हो गया।

ऐसे ही एक रोज़ मेरा तीसरा लड़का फ़रीद बख़्श आपके हुज्रा के क़रीब हुज्रा की तरफ़ मूह करके पेशाब करनें लगा वह भी उसी वक़्त तड़प तड़प कर ख़त्म हो गया। हज़रत बाबा की इस तहरीर से आप बख़ूबी अंदाज़ा कर सकते हैं कि आप के जज़्ब की हालत किस क़दर शदीद थी कि जिसपर कोई ग़ैर नहीं बल्कि अपने तीन मामूंज़ादे यके बाद दिगरे जां बहक़ हो गए और इसी के साथ–साथ इसका भी अंदाज़ा कीजिए कि किस क़दर क़ाबिले क़दर थी हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन रह॰ की कूव्वते बर्दाश्त कि एक के बाद एक दिगर तीन साहबज़ादे मौत की गोद में जा सोए मगर आपकी पेशानी पर बल तक नहीं आया।

साबिर का लक़ब पाना

कहा जाता है कि जब आप की वालिदा माजिदा को इन दर्दनाक वाकिआत की इत्तेला मिली तो वह फ़ौरन पाक पट्टन तशरीफ़ ले आईं। तीन भतीजों की मौत का उनके दिल पर

बहुत असर हुआ। जब आपकी वालिदा माजिदा ने आपको बहुत ज़्यादा कमज़ोर व लाग़र पाया तो इसका सबब मालूम किया तो उन्हें पता चल गया कि आप बिल्कुल भी कुछ नहीं खाते तो इन्हें बहुत अफ़सोस हुआ। आपने फ़ौरन अपने भाई बाबा फ़रीदुद्दीन गंज शकर रह॰ से दरयाफ़्त फ़रमाया कि आप रहमतुल्लाह अलैह ने हमारे बच्चे को ख़ाने को नहीं दिया इसपर हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह ने जवाब दिया कि मैं ने आपके बच्चे को पूरे लंगर का मालिक बनाया है। आप बुलाकर दरयाफ़्त कर लें जब मख़दूम अली अहमद को बुलाकर पूछा गया तो आप ने फ़रमाया कि मामूं जान आप मुझे लंगर तक़्सीम करने को कहा था न खाने को। आख़िर मैं किस तरह से खा सकता था। इस पर बाबा फ़रीद को सख़्त हैरानी हुई। आप रह॰ ने भांजे की पेशानी को बोसा दिया और बहन की तरफ़ मुख़ातिब होकर कहा यह बच्चा साबिर कहलाने के लिए पैदा हुआ है। आज से यह मख़दूम अलाउद्दीन अली अहमद साबिर रह॰ है। इसी दिन से आप साबिर पाक रह॰ मशहूर हुए।

आप का अक़्दे निकाह

कुछं दिनों बाद आप रह॰ की वालिदा ने अपने भाई फ़रीद रह॰ से दरख़्वास्त की कि मेरे साबिर बालिग़ हो गए इसलिए मैं चाहती हूं कि आप अपनी लड़की ख़दीजा बेग़म उर्फ शरीफ़ा की शादी साबिर से कर दीजिए। इसपर आप के भाई ने फ़रमाया कि मख़दूम अली अहमद साबिर रह॰ इस लायक नहीं कि इनकी शादी की जाए क्योंकि उन पर जज़्ब व इस्तग़राक़ हर वक़्त तारी रहता है और दुनियाए सलूक से बहुत दूर हैं बहन को अपने भाई के यह अल्फ़ाज़ सुनकर बहुत कलक़ हुआ। आप

फ़रमाने लगीं कि मेरा साबिर यतीम है और मैं ग़रीब और लाचार हूं इस वजह से आप इन्कार कर रहे हैं। बहन के इन कलिमात ने भाई के दिल पर असर किया और आप ने दुख़्तरे नेक अख़्तर का निकाह साबिर पाक से कर दिया।

कहा जाता है कि निकाह के बाद रात हुई तो ज़माने के दस्तूर के मुताबिक़ आप की दुल्हन को आप के हुजरे में पहुंचाया गया जिस वक़्त बीबी ख़दीजा आप के हुजरे में दाखिल हुई उस वक़्त आप नफ़िल नमाज़ पढ़ने में मसरूफ़ थे जब तक आप नमाज़ पढ़ने में मशगूल रहे वह आपकी ख़िदमत में दस्त बस्ता खड़ी रहीं जब आप नमाज़ पढ़ चुके तो बीबी ख़दीजा को खड़ी देख कर पूछा तुम कौन हो? उन्होंने जवाब में अर्ज़ किया कि में आपकी मन्कूहा दुल्हन हूँ। यह सुनकर आप रह॰ ने इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह तआला की ज़ात तो फ़र्द है उसे मन्कूहा से क्या काम? अभी आप रह॰ के मुँह से यह कलिमात पूरी तरह अदा भी नहीं हुए थे कि अचानक ज़मीन से एक आग का शोला भड़का और दुल्हन को जला कर ख़ाकसतर कर दिया। और हज़रत बाबा फ़रीद रह॰ के क़ौल के मुताबिक़ आप जज़्ब की कैफ़ियत से बाहर नहीं आ सके। बयान किया जाता है कि आप रह॰ की ज़ौजा की इस दर्दनाक मौत का आपकी वालिदा माजिदा के ऊपर इतना असर हुआ कि वह सदमा से बेहाल हो गई वह एक तरह से खुद को इस वाक़िये का ज़िम्मेदार समझती थीं और इसी सदमे से उनका इन्तक़ाल हो गया।

हज़रत साबिर पाक़ का बाबा फ़रीद से बैअत होना

हज़रत मखदूम अलाउद्दीन अली अहमद साबिर पाक रह॰ अपनी वालिदा की वफ़ात के बाद 9 साल तक अपने हुज्रे से

सिवाए ज़रूरते ख़ास के बाहर नहीं आए। हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन फ़रमाते हैं कि बमौजिबे इल्हामे बातन मैं मख़दूम साबिर पाक के हुज्रे में गया देखा कि इस्तग़राक़ व महवियत आप पर तारी है। मैंने सात मर्तबा कान में कलिमा तय्यबा पढ़ा तो हज़रत साबिर पाक रह. की तबीअत मराक़बा फ़ना से बक़ा की तरफ़ मुतोवज्जा हुई। आप रह. ने आंखें खोल दीं आदाब बजा लाए। मैं उन को अपने हम्राह ले कर आया और अपने हाथ पर १७ मोहर्रम ४२३ हि. बरोज़ जुमेरात बाद नमाज़ इशराक़ बीअ़त बा सिलसिला ख़ानदाने चिश्तिया आलिया मुशर्रफ़ करके कैफ़ियते बातिन मर्तबा सलूक की तालीम से सरफराज़ किया।

दिल्ली की विलायत

ज़िलहिज्जा 650 में बाबा फ़रीद गंज शक्र रह. ने हज़रत साबिर पाक रह. को अपने सामने बिठाकर अमाम–ए–सब्ज़ अपने दस्ते मुबारक से आप रह. के सर पर बांधा और इस्मे आज़म जो ख़्वाजगाने चिश्त में सीना ब सीना चला आता है आपको सिखाया आपको ख़रका–ए–ख़िलाफ़त विलायत देकर दिल्ली रुख़्सत किया और सनद व इजाज़त नामाए विलायत अपने दस्ते मुबारक से लिख कर फ़रमाया कि इसको अव्वल शेख़ जमाल हांसवी रह. को दिखला कर मुहर लगवाना और बाद में दिल्ली जाना।

चुनांचे हज़रत साबिर पाक रह. अजोधन (पाक पट्टन) से हांसी के लिए रवाना हुए। हज़रत जमाल हांसवी आप रह. को आता देखकर दरवाज़े पर इस्तक्बाल के लिए आए और आपकी ताज़ीम में कोई दक़ीक़ा बाक़ी नहीं रखा और हाल पीरे दस्तगीर का पूछा इसी गुफ़तगू में नमाज़े मगरिब का वक़्त हो गया। और दोनों साहिबान ने साथ साथ नमाज़े मग़रिब अदा

की। बाद नमाज़े मग़रिब हज़रत साबिर पाक रह॰ ने ख़िलाफ़त नामा हज़रते जमाल हांसवी रह॰ की ख़िदमत में पेश किया। हज़रत जमाल रह॰ ने चिराग़ मंगवाया नागाह हवा तेज़ चल रही थी चिराग़ गुल हो गया। हज़रत साबिर पाक ने चिराग़ पर फूंक मारी तो चिराग़ शुरू हो गया। दूसरी रिवायत के मुताबिक़ जब चिराग़ के आने में देर हुई तो आपने अपनी अंगुश्ते मुबारक पर फूंक मारी तो उंगली रौशन हो गई और फ़रमाया कि फ़रमान पर मुहर सब्त कीजिए यह हालत देख कर हज़रत जमाल हांसवी रह॰ ने आप रह॰ की दस्ते मुबारक से फ़रमान ले कर फ़ाड़ डाला और कहा कि तुम्हारे दम की ताक़त दिल्ली में कहां है तुम तो एक फूंक मार कर पूरी दिल्ली ख़ाक कर दोगे।

हज़रत साबिर रह॰ को शेख़ जमाल की इस हरकत पर बेहद गुस्सा आया और आप रह॰ ने फ़रमाया कि तुमने मेरा ख़िलाफ़त नामा फ़ाड़ दिया है मैं तुम्हारी कुतबियत को टुकड़े टुकड़े करता हूं। इसके बाद आप वहां से चलकर सीधे अपने शेख़ बाबा फ़रीद रह॰ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और तमाम तर हालात जो पेश आए थे अपने शेख़ की ख़िदमत में बयान कर दिए। जब हज़रत बाबा फ़रीद रह॰ ने पूरे वाकिआत सुने तो फ़रमाया कि जमाल के फाड़े हुए को फ़रीद सी नहीं सकता जो होना था वह हो चुका मशीयते एज़दी में किसी का चारा नहीं लेकिन घबराओ नहीं इतमिनान रखो ख़ुदा के हुक्म से तुम्हारे लिए कलियर शरीफ़ मुक़र्रर हो गया है। इसके बाद काग़ज़ और क़लम लेकर अपने दस्ते मुबारक से कलियर शरीफ़ जाने का हुक्म दिया।

कलियर शरीफ़ की विलायत

हजरत बाबा फ़रीद गंज शक्र रह॰ जो आप रह॰ के मामूं भी

थे और पीर मुर्शिद भी थे बहुक्मे इलाही फ़रमाने विलायत मुल्के कलियर बदस्ते ख़ास तहरीर फ़रमा कर हज़रत मख़दूम साबिर पाक रह. को अता फ़रमाया और खुद ही मोहर लगा दी और अलीम इब्दाले को आप के हमराह करके कलियर की तरफ़ रवाना किया।

कलियर शरीफ़ में आमद

हक़ीक़त गुल्ज़ारे साबरी से रिवायत है कि हज़रत अला उद्दीन अली अहमद साबिर पाक अलीमुल्ला इब्दाल के साथ ६५६ हि. में कलियर शरीफ़ पहुंचे और मसम्मात गुल्ज़ारी रोग़न गर के यहां मुक़ीम हुए और उसके मकान के एक गोशे में सकूनत इख़्तियार कर ली और हस्बे मामुल इबादत व रियाज़त में मशगूल हुए। बहुत जल्द आप के ज़ुहद व तक़वा की शोहरत तमाम आबादी–ए–कलियर शरीफ़ में फ़ैल गई।

आग़ाज़े रुशद व हिदायत

हज़रत साबिर पाक रह. ने अपने पीर व मुर्शिद हज़रत बाबा फ़रीद गंज शक्र रह. की इजाज़त से रशद व हिदायत का सिलसिला जारी फ़रमाया सबसे पहले मसम्मात गुल्ज़ारी ज़ईफ़ा आपकी मुरीद हुइ और इसके बाद उसका लड़का बहाउद्दीन मुरीद हुआ।

जब आप की शोहरत होने लगी तो कुछ लोग जिनमें उमरा क़ाज़ी तबरक शामिल थे आप रह. की खुल्लम खुल्ला मुख़ालिफ़त करने लगे क़ाज़ी तबरक की मुख़ालिफ़त की इन्तहा नहीं रही। आप ने कल्यर शरीफ़ की मस्जिद में भी वाज़ व नसीहत का सिलसिला शुरू किया। यह बात क़ाज़ी तबरक को सख़्त नागवार मालूम हुई उसने रईसे कलियर क़यामुद्दीन से शिकायत करनी

शुरू कर दी और आप की तरफ़ से उसको बदज़न कर दिया।

कलियर शरीफ़ में पहली करामत

एक दिन जुमा की नमाज़ के बाद जबकि हज़रत साबिर पाक रह॰ मस्जिद में वाज़ फ़रमा रहे थे। अहालियाने कलियर वहां जमा थे ज़मवान रईसे कल्यर ने आप रहमतुल्लाह अलैह से सवाल किया कि अगर आप वाकई साहिबे विलायत व करामत हैं तो इस बकरी का पता लगाइये जो तीन माह से ग़ायब हैं अगर आप ने बतला दिया तो मैं आपको अपना इमाम तसलीम कर लूंगा। हज़रत साबिर पाक रह॰ समझ गए कि रईसे कलियर इम्तहान लेना चाहता हैं आप रह॰ ने आसमान की तरफ़ देखा और हाथ उठाकर फ़रमाया कि बकरी खाने वाले हाज़िर हो जाएं। आप का यह फ़रमाना था कि थोड़ी ही देर में 27 आदमी बदहवासी के आलम में हाज़िर हुए। जब आप ने इन लोगों से बकरी के मुतालिक़ दरायाफ़्त किया तो उन्होंने एक ज़ुवां होकर इन्कार किया कि हम लोगों ने बकरी नहीं खाई। तब रईसे कलियर से आप रहमतुल्लाह अलैह ने मुख़ातिब हो कर फ़रमाया कि तुम इस बकरी का नाम लेकर पुकारो जब रईस कलियर ने अपनी बकरी का नाम हरमना लेकर पुकारा तो इन लोगों के पेट से बकरी की आवाज़ आई। बकरी ने सारा माजरा कह दिया कि कहां इसको ज़िबह किया गया था। और कहां कहां इसका गोश्त भून कर खाया गया था। यह करामत देख कर रईसे कलियर ने बे–साख़्ता कहा कि आप वाकई साहिबे करामत हैं। जब क़ाज़ी तबरक ने देखा कि रईसे कलियर हज़रत की करामत का क़ायल हो गया है तो रईसे कलियर को किसी तरह से बहका कर यह समझा दिया कि यह सब बातें जादू के असर से हुई। यह बात रईसे कलियर के दिमाग़ में आ गई और इस करामत को जादू

समझने लगा। जब हज़रत साबिर पाक रह. को इस बात का इल्म हुआ कि रईसे कलियर क़ाज़ी तबरक की बातों में आकर आप की करामत को जादू कह रहा है तो आप ने फ़ौरन कहा कि रसूलुल्लाह स॰ की सुन्नत अदा हुई।

आप रह॰ को कलियर आए हुए अभी ज़्यादा अरसा नहीं गुज़रा था के कमालात व करामात की शोहरत दूर दूर तक पहुंच गई आप रह॰ के फ़यूज़ व बरकात से लोग मुस्तफ़ीज़ होने लगे आप खुद कभी खिलाफ़े शरीअ़त नहीं चले और न ही किसी को ख़िलाफ़े शरीअ़त चलते हुए बर्दाश्त करते आपकी तबियत में इस क़द्र जलाल था कि आपकी हैबत की वजह से आपकी ख़िदमत में हाज़िर होते हुए आम लोगों को ख़ौफ़ मालूम होता था।

कुछ दिनों के बाद जब हज़रत साबिर पाक रह॰ बाशिन्देगाने कलियर को समझा समझा कर तंग आ गए तो हक़ीक़ते हाल अपने पीर व मुरशीद के हजूर में पेश किया और इजाज़त तलब की कि जो हुक्मे आली हो वह बजा लाऊं। जिसके जवाब में हज़रत बाबा फ़रीद रह॰ ने लिखा कि बरखुदार अल्लाह तआ़ला के हुक्म से यह विलायत तेरी है और इसका इख़्तियार तेरे हाथ में है जैसा समझो करो।

वाक़ेआ–ए–जामा मस्जिद

एक दिन का वाक़ेआ है कि आप अपने ख़ादिमों को साथ लेकर जुमा की नमाज़ अदा करने की ग़र्ज़ से जामा मस्जिद में तशरीफ़ लाए और वहां जाकर पहली सफ़ में तशरीफ़ फ़रमा हो गए।

कुछ देर बाद जब उलमाए ज़ाहिर की जमाअत जामा मस्जिद में पहुंची तो उन्होंने पहली सफ़ को घेरा हुआ पाया

उन्होंने जब यह हाल देखा तो आप रह. के ख़ादिमों से निहायत हक़ारत अमेज़ लहजे में कहा तुम इस जगह के काबिल नहीं हो यहां से उठो और पीछे की सफ़ों में जा कर बैठ जाओ। आप रहमतुल्लाह अलैह के ख़ादिमों ने उनसे कहा कि जब हम यहां आए थे तो उस वक़्त यह जगह ख़ाली थी और हम क्योंकि पहले आए थे इसलिए यहां बैठ गए। उलमाए ज़ाहिर ने जब आपके ख़ादिमों के मूंह से यह जवाब सुना तो गुस्से से जल भुन गए। और बोले कि यह जगह सिर्फ़ हमारे बैठने के लिए ही मख़्सूस है कोई और, ख़्वाह पहले से आए या बाद में, यहां नहीं बैठ सकता। ग़र्ज़ इसी तरह बात बढ़ती चली गई और मस्जिद में शोर होने लगा। शोर की आवाज़ सुनकर आप जज़्ब की कैफ़ियत से बाहर आए और फ़रमाया कि इस जगह का साहबे विलायत ही पहली सफ़ में बैठने के लायक़ है। उलमाए ज़ाहिर ने यह फ़ाज़िलाना सुना तो उनके तन बदन में आग लग गई और ग़ज़बनाक होकर पूछने लगे कि अगर तुम साहिबे विलायत हो तो तुम्हारी विलायत का सबूत क्या है। इस पर आप को भी जलाल आ गया और आप रह. ने फ़रमाया कि मेरी विलायत का सबूत यह है कि तुम सब अभी मर जाओगे। और अहले शहर मे से कोई भी ज़िन्दा नहीं बच सकेगा और तवील अर्से तक यह शहर कभी आबाद नहीं हो सकेगा। यह कहकर आप अपने तमाम खुद्दाम के हमराह बाहर तशरीफ़ लाए। और मस्जिद को सज्दा करने का हुक्म दिया। आप की ज़बान से इन अल्फ़ाज़ का निकलना था कि मस्जिद फ़ौरन शहीद हो गई और तमाम लोग जो मस्जिद के अन्दर मौजूद थे दब कर मर गए।

मुसमात गुलज़ारी भी यह वाक़ेआ सुनकर फ़ौरन अपने घर से मस्जिद की तरफ़ आ गई और हज़रत साबिर पाक रह. से अर्ज़ किया कि हजूर मेरा लड़का बहाउद्दीन भी इसी मस्जिद में

नमाज़ पढ़ने आया था। आप रह. ने फ़रमाया कि अख़ीर सीढ़ी के नीचे आ गया है जाकर निकाल ले गुलज़ारी ने कहा सीढ़ी मुझसे क्यों कर उठेगी। हजूर ने हज़रत अलीमुल्ला इबदाल से फ़रमाया कि जाकर हमारा नाम लेकर लड़के को निकाल लो। अलीमुल्ला इबदाल आप रह. के हुकम के मुताबिक़ सीढ़ी के पास आए और बहाउद्दीन को निकाल कर उसकी माँ मसम्मात गुलज़ारी के हवाले कर दिया।

कलियर की वीरानी

मस्जिद के शहीद होते ही बाक़ी लोगों में ख़ौफ़ व हरास फैल गया आप रहमतुल्लाह ने गुलज़ारी और उसके लड़के से फ़रमाया कि जो मेरे दोस्त व अक़ीदतमंद है। उनसे कह दो कि फ़ौरन ही बारह कोस के फ़ासले पर चले जाएं। जब अक़ीदतमंद चले गए तब ऐसी वबा फैली कि बहुत से लोग इसके शिकार हो गए कि एक भी मुतनफ़्फ़ुस नहीं बच सका। उस वक़्त जब आपकी क़हर आलूद नज़र ज़मीन पर पड़ी तो कलियर शरीफ़ के चारों तरफ़ दस कोस से ज़्यादा रक़बे में इन्सान, मवेशी, दरख़्त और खेतियां वग़ैरा सब कुछ जलकर ख़ाक हो गया।

जैसा कि आप पढ़ चुके हैं कि आप रह. के अन्दर शुरू से ही जलाली कैफ़ियत बहुत थी मगर कलियर शरीफ़ की बरबादी के बाद तो आप रह. की यह कैफ़ियत अपनी इन्तहा को पहुंच गई। आप के जलाल का यह आलम हो गया था कि जिस जगह भी आप रह. की निगाह पड़ती वहीं से आग के शोले बुलन्द होने लगते। आप रह. के रोब व जलाल के डर से कोई आदमी भी आपके पास नहीं आता था।

कहा जाता है कि कलियर शरीफ़ की बर्बादी के बाद

तक़रीबन बारह साल की तवील मुद्दत तक आप एक गूलर के दरख़्त को पकड़े हुए इसतग़राक़ की हालत में खड़े रहे न दिन को ख़ाते थे न ही रात को सोते थे बस दिन रात खड़े रहते थे। उनके हालात का इल्म जब हज़रत बाबा फ़रीद गंज शकर रहमतुल्लाह को हुआ तो उन्हें बहुत अफ़सोस हुआ तो उन्होंने अपने मुरीदों व ख़ादिमों से फ़रमाया कि जो भी साबिर को बिठाने में कामियाब हो जाए जो चाहेगा वहीं पाएगा। इस बात को सुनकर हज़रत शमसुद्दीन जो बाबा फ़रीद गंज शकर रहमतुल्लाह कीं ख़िदमत में थे। आपको बिठाने का वादा किया बाबा फ़रीद रह. ने हज़रत शमसुद्दीन को समझाया कि ख़बरदार अली अहमद साबिर पाक रह. के सामने से न गुज़रना। बल्कि उनकी जानिब से कोशिश करना, और दुआ दी ख़ुदा तुम्हारी मदद करे। आप अलीमुल्ला इबदाल की मारफ़त से कलियर आए। जब हज़रत साबिर पाक रह. के मक़ाम से कुछ फ़ासला पर रह गए तो आपने बा आवाज़े बुलन्द क़िरअत के साथ कलामुल्लाह शरीफ़ पढ़ना शुरू किया और पुश्त की जानिब खड़े होकर पढ़ते ही रहे। शमसुद्दीन के पढ़ने का अन्दाज़ बहुत ही सुहाना था। बड़ी देर के बाद साबिर पाक रह. मुतवज्जह हुए और फ़रमाया कि पुश्त की जानिब कलामुल्ला शरीफ़ पढ़ना ठीक नहीं है। सामने आकर पढ़ो। आप रहमतुल्लाह अलैहि इस तरह कलामुल्लाह पढ़ते रहे और जब काफ़ी देर हो गई तो रुक गए। आप साबिर पाक ने फ़रमाया कियों रुक गए पढ़ो तो शमसुद्दीन ने अर्ज़ किया कि हज़रत खड़े खड़े थक गया हू। अब खड़े होने की सकत नहीं रही हैं। हज़रत साबिर पाक ने फ़रमाया अच्छा बैठ जाओ इसपर हज़रत शमसुद्दीन ने फिर अर्ज़ किया कि यह कैसे मुमकिन है कि हजूर खडे रहें और गुलाम बैठ जाए। जब दोबारा आप ने बैठने को कहा तो शमसुद्दीन ने वही जवाब अर्ज़ किया और कहा कि अगर हुजूर

बैठ जाएें तो बन्दा भी बैठ जाए।

चुनांचे साबिर पाक रह॰ ने बैठने का इरादा फ़रमाया लेकिन किस तरह से बैठते हाथ पैर सिल हो गए थे हज़रत शमसुद्दीन ने बमुश्किल सहारा देकर इसी गूलर के दरख़्त से कमर लगा कर आपको बिठा दिया।

हज़रत शमसुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह का बैअत होना

जब साबिर पाक रह॰ को होश आया तो आप रह॰ ने शमसुद्दीन से फ़रमाया कि तुझको मेरे मुर्शिद ने भेजा है इस पर शमसुद्दीन ने जवाब दिया कि हां जैसा कि आपको मालूम है। मेरा इरादा पाक पटन जाने का है अगर हजूर मुस्तक़िल तौर पर इस गुलाम को अपनी ख़िदमत का शर्फ़ अता फ़रमाएें तो यहीं क़याम करूं। हज़रत साबिर पाक रह॰ ने आप के सर पर हाथ रखा और फ़रमाया कि तुम मेरे फ़रज़न्द हो। इसके बाद हज़रत साबिर पार रहमतुल्लाह ने हज़रत शमसुद्दीन को बाक़ायदा तौर पर सिलसिला–ए–चिश्तिया में मुरीद किया उसके बाद हज़रत शमसुद्दीन ने आप रहमतुल्लाह से अर्ज़ किया हज़रत भूख लग रही है। आप ने इरशाद फ़रमाया कि गूलरी तोड़ कर उबाल लो और खाओ इसपर शमसुद्दीन ने गूलरी तोड़ कर उबालीं और मुर्शिद के सामने पेश कीं। आप रह॰ ने खाने से इन्कार कर दिया इसपर शमसुद्दीन ने कहा यह कैसे मुमकिन है कि हुजूर नहीं खाएें और मैं खाऊं। तो आप रह॰ ने गूलरियां खाईं। फिर हजरत शमसुद्दीन ने आप को वजू कराया और दोनों ने नमाज़ मग़्रिब अदा की और इशा की नमाज़ के बाद हज़रत साबिर पाक रह॰ ने आपको हिदायत

फ़रमाई कि बाद नमाज़े इशा मेरे नज़दीक हरगिज़ नहीं आना। बल्कि दूर अलग रहना। तहज्जुद की नमाज़ के वक़्त आने की इजाज़त है। हज़रत शमसुद्दीन ने कुछ दूर जाकर अपनी रात बसर की हज़रत शमसुद्दीन का रोज़ाना का यह उसूल हो गया कि आप तहज्जुद के वक़्त अपने मुरशिद की ख़िदमत में हाज़िर होते उनको इस्तग़राक़ कीं हालत में पाते तो तीन बार कान में सलाह कहते तो उनको होश आ जाता। फिर उनको वज़ू कराते और वह बाद नमाज़ तहज्जुद और फ़ज्र फिर आलमे इस्तग़राक़ में ग़र्क़ हो जाते और कभी कभी इसी गूलर का टहना पकड़ कर खड़े हो जाते हज़रत शमसुद्दीन उनको याद दिलाते कि नमाज़ का वक़्त क़रीब है तो आप वज़ू फ़रमाते और नमाज़ अदा करते। हज़तर शमसुद्दीन ने फिर एक झोंपड़ी तैयार की और दोनों वहां रहने लगे। हज़रत साबिर पाक रह. रोज़ाना दिन में रोज़ा से रहते और इफ़्तार के वक़्त शमसुद्दीन गूलरियां उबाल कर आपके सामने पेश करते तो कभी कभी आलमे इस्तग़राक़ में फ़रमाते कि ख़ुदा खाने पीने से पाक है फिर कुछ होश आता तो फ़रमाते हां लाओ ख़ुदा ख़ुदा ही है और बन्दा बन्दा ही है।

सिवाए हज़रत शमसुद्दीन के और कोई बनी आदम ख़िदमते आली में नहीं रहता था। हज़रत शमसुद्दीन हर वक़्त हाज़िरे ख़िदमत रहते और जो इरशाद होता उसकी फ़ौरन तामील करते अगर इत्तफ़ाक़न कुछ वक़्फ़ा हो जाता तो आप रह. फ़रमाते कि शमसुद्दीन अन्धा हो गया है तो वह अन्धे हो जाते और अगर फ़रमाते शमसुद्दीन अन्धा लंगड़ा हो गया है तो वह लंगड़े हो जाते फिर जब आप रह. को अपने फ़रज़न्द का अन्धा लंगड़ा होना महसूस होता तो बारगाहे इलाही में दुआ करते कि ऐ रब्बुल आलमीन मेरा तो एक यही शिष्य है इसको अच्छा कर दे पस

हज़रत शमसुद्दीन फ़ौरन असली हालत पर आ जाते।

रिवायत है कि जब हज़रत शमसुद्दीन आपकी ख़िदमत में आए और हज़रत मख़दूमे पाक रहमतुल्लाह के नज़दीक झोंपड़ी में रहने लगे तो रफ़्ता–रफ़्ता दीगर असख़ास की आमदो रफ़्त शुरू हो गई। दूर–दूर से लोग आप रह. की ख़िदमत में हाज़िर होते रहते और आप के फ़ैज़ से मुशर्रफ़ होते रहते थे। लेकिन कोई इन्सान रात के वक़्त आप रह. के पास नहीं ठहर सकता था।

एक मर्तबा का ज़िक्र है कि हज़रत निज़ामुद्दीन महबूबे इलाही का एक मुरीद हज़रत साबिर पाक रह. की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। बाद सलाम व पैग़ाम रसानी के हज़रत से दरयाफ़्त करने लगा कि हज़रत के कितने मुरीद हैं। आप रह. ने फ़रमाया कि सिर्फ़ एक। फिर आप रह. इस मुरीद से दरयाफ़्त करने लगे कि तुम्हारे मुर्शिद के कितने मुरीद हैं कि जितने आसमान में तारे यह जवाब सुनकर हज़रत मुस्कुराए और फ़रमाने लगे कि हमारा शमस औलिया में मिसले आफ़ताब है।

रिवायत है कि हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया के ख़लीफ़ा ख़ास हज़रत अमीर ख़ुसरो रह. हज़रत साबिर पाक रह. की ज़ियारत करने कलियर शरीफ़ तशरीफ़ लाए और अपना कलाम हज़रत साबिर पाक रह. को सुनाया आप उनसे बहुत ख़लूस व मोहब्बत के साथ पेश आए। जब अमीर ख़ुसरो वापस निज़ामुद्दीन औलिया के पास आए तो उनसे सारा वाक़्या सुनाया तो हज़रत निज़ाम उद्दीन औलिया ने उनकी आंखें चूम लीं और हाथ चूम लिए क्योंकि उन्हीं आंखों से आप को हज़रत साबिर पाक रह. का दीदार नसीब हुआ था और मुसाफ़ा किया था।

तज़किरा–ए–औलिया से रिवायत है कि एक बार हसन

नामी कव्वाल जो बाबा फ़रीदुद्दीन की ख़िदमत में रहता था आप रह. से इजाज़त लेकर हज़रत साबिर पाक रह. की ख़िदमत में कुछ इनाम व इकराम के लिए हाज़िर हुआ तो उसने कलियर को वीरान पाया जब वह एक झोंपड़ी के क़रीब आया तो उसे ख़ाली पाया इधर उधर देखा तो क्या देखता है कि हज़रत साबिर पाक रह. एक गूलर का टहना पकड़े हुए खड़े हैं। वह कव्वाल बा अदब खड़ा रहा थोड़ी देर के बाद आप ने आंख खोली तो पूछा कि तू कौन है। इसपर कव्वाल ने जवाब दिया कि फ़रीदुद्दीन का कव्वाल। आप ने पूछा कि कौन फ़रीदुद्दीन। उसने कहा तुम्हारे शेख़। शेख़ का नाम सुनते ही आप होश में आए और दरयाफ़्त फ़रमाया कि मेरे शेख़ अच्छे हैं फिर कव्वाल को आप रहमतुल्लाह अपनी झोंपड़ी में ले आए चुल्हे पर एक हांडी रखी हुई थी उसमें चन्द गूलर थे वह उस कव्वाल को दे कर रुख़्सत किया कव्वाल दिल में नराज़ हुआ और सोचा कि यह गूलर अपने बाबा फ़रीदुद्दीन को दिखाऊंगा। जब बाबा फ़रीद की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो उस कव्वाल ने सारा वाक़ेया सुनाया। और गूलर बाबा साहब को पेश किए बाबा फ़रीद रह. बहुत ख़ुश हुए और वह गूलर ख़ुद खाए और बाक़ी हाज़रीन को दिए। जिन्होंने वह गूलर खाए उनके नूरे बातन में तरक्की हुई।

हज़रत साबिर पाक रहमतुल्लाह की वसीयत

और अताए ख़िरका-ए-ख़िलाफ़त

हज़रत साबिर पाक रह. के आने के तेरह बरस बाद हज़रत ख़्वाजा शमसुद्दीन रह. अलै. आप की ख़िदमत में

हाज़िर हुए आपके तशरीफ़ लाने के कुछ अर्से बाद हज़रत बाबा फ़रीद रह॰ का विसाल हो गया। जब हज़रत साबिर पाक रह॰ को इसका इल्म हुआ तो आप को बहुत सदमा हुआ और फ़रमाया कि मेरे मुर्शिद को फ़ना और बक़ा दोनों हासिल हैं इस पर हज़रत शमसुद्दीन ने दरयाफ़्त किया कि फ़ना और बक़ा से क्या मुराद है तो हज़रत ने फ़रमाया कि वक़्त आने पर बता दूंगा।

एक दिन हज़रत शमसुद्दीन को अपने पास बुला कर हज़रत मख़्दूम अली अहमद अलाउद्दीन साबिर पाक ने सिलसिला चिश्त के मुताबिक़ इस्मे आज़म की तालीम दी। और ख़रक़ा–ए–खिलाफ़त आप को अता फ़रमाया।

जब उन्हें आपकी ख़िदमत करते–करते चोबीस साल गुज़र गए तो आप ने एक दिन उनसे फ़रमाया कि शमसुद्दीन रह॰ अब तेरी तरबियत मुकम्मल हो गई है अब तुम जाओ शाही फौज में नोकरी कर लो। मगर याद रखो जिस दिन भी तुम से कोई करामत सरज़द हो गई वह दिन हमारी जिन्दीगी का आख़री दिन होगा। तू मेरा फ़रज़न्द हैं सिवाए तेरे बन्दगाने खुदा में से कोई मेरी तदफ़ीन में शामिल नहीं होगा। फ़ौरन आकर मुर्शिद की तदफ़ीन करना। उसके बाद इस सरज़मीन पर नहीं ठहरना। बल्कि पानीपत चले जाना।

यह सुनकर हज़रत ख़्वाजा शम्सुद्दीन ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर को गुसल दिया जाएगा। इस पर हज़रत ने फ़रमाया "हां" इस पर शम्सुद्दीन ने अर्ज़ किया जबकि बन्दगान खुदा से कोई न होगा। तो में तन्हा कैसे गुसल दूंगा।

आप ने फ़रमाया इरादा कर लेना गुसल हो जाएगा और जिस चीज़ की तुझको ज़रूरत होगी उसका ख़्याल अपने दिल व दिमाग़ में लाते रहना खुद बखुद तेरी ज़रूरत पूरी होती

रहेगी। फिर हज़रत शम्सुद्दीन रह. ने पूछा कि हूजूर का कफ़न कहां से आएगा। तो फ़रमाया कि तू मुहय्या करेगा। लेकिन खुश्बू फ़रिश्ते अपने साथ लाएंगे। आख़िर में हज़रत शम्सुद्दीन ने अर्ज़ किया कि मुर्शिद पानीपत में तो हज़रत बू अली शाह क़लन्दर पहले ही से मौजूद हैं इसके जबाव में हज़रत ने फ़रमाया कि उनका वक़्त आख़िर आ गया है और जब तुम वहां पहुंचोगे तो वह वहां से चले जाएंगे।

आप के फ़रमान के बाद शम्सुद्दीन रह. कलियर शरीफ़ से जाकर सुलतान अलाउद्दीन खिलजी की फ़ोज में भरती हो गये इसी दौर की बात है जबकि आप सुलतान की फ़ौज में एक सिपाही थे कि सुलतान चित्तौड़गढ़ की फ़तह में बार बार नाकाम होने की वज़ह से बहुत रंजीदा और पस्त हिम्मत हो रहा था। जब वह अपनी तमामतर तर्क़ीबें आजमा चुका और नाकाम रहा तो बहुत दिल बरदाश्ता हुआ और आख़िर में इस सिलसिला में फुक़रा की मदद चाही।

सुलतान जिन दिनों फ़क़ीरों की तलाश में मारा-मारा फ़िर रहा था। और परेशान था तो किसी फ़क़ीर ने सुलतान से कहा कि बग़ल में कटोरा शहर में धंडोरा सुलतान ने जब उन से इस फ़िकरे की वजाहत चाही तो उन्होंने ने कहा कि तुम बेकार ही फुकरा की तलाश में सरगरदाँ फिर रहे हो हालांकि खुद तुम्हारी फ़ौज में इतना अज़ीम् शख़्स मौजूद है कि अगर वह दुआ कर दे तो फ़तह सामने है सुलतान ने पूछा मुझे पता कैसे चलेगा वह बुजुर्ग कौन हैं। फ़क़ीर बोले कि उन बुजुर्ग की अलामत यह है कि आज रात में ज़ोर की हवा चलेगी तो तमाम सिपाहियों के चिराग़ गुल हो जाएंगे। पूरे लश्कर में सिर्फ एक ही चिराग़ रौशन रहेगा। और वह चिराग़ उन्हीं बुजुर्ग का होगा। सुलतान यह बात सुनकर बहुत खुश हुआ और निहायत

बैचेनी के आलम में रात होने का इन्तज़ार करने लगा। खुदा–खुदा कर के रात हुई और आहिस्ता–आहिस्ता हवा चलनी शुरू हुई। रात बढ़ती गई। हवा की तेज़ी में शिद्दत आती गई। यहां तक कि जब रात आधी से ज़्यादा गुज़र गई तो बहुत तेज़ी के साथ हवा चली और एक--एक करके तमाम ख़ेमों के चिराग़ गुल होने लगे। सुलतान ने ग़ौर किया तो उसे पता चला कि सभी ख़ेमों के चिराग़ गुल हो चुके हैं। मगर पूरे लश्कर में एक ख़ेमा ऐसा भी था जिस का चिराग़ अपनी पूरी आब व ताब के साथ रौशन था। और हवा की तेज़ी का इस पर मुतलक़ असर न था। सुलतान दौड़ता हुआ उस ख़ेमा पर आया तो उस ने देखा कि शम्सुद्दीन तिलावते कलामे पाक में मशगूल हैं। यह देखकर सुलतान दस्त बस्ता आप रह. आप की ख़िदमत में खड़ा हो गया। जब शैख़ शम्सुद्दीन तिलावते कलामे पाक से फ़ारिग़ हुए औरे सुलतान को अपनी ख़िदमत में दस्त बस्ता खड़े हुए पाया तो समझ गए कि आब छुपना मुश्किल है चुनांचे वह भी कलाम पाक को लपेट कर खड़े हो गए। और सुलतान से पूछा कि सुलतान ने इस वक़्त क्यों तक़लीफ़ फ़रमाई। सुलतान ने उसी तरह दस्त बस्ता अर्ज़ किया कि हजूर मेरी ख़ता माफ़ हो। मुझे दरअसल आप रह. की बुज़ुर्गी और क़दरो मन्ज़िलत का पता नहीं था।

हुजूर से गुज़ारिश है कि दुआ फ़रमाऐं ताकि किला जल्द अज़ जल्द फ़तह हो जाए क्योंकि मैं अपनी तमाम तर तरकीबें आज़मा कर आजिज़ आ चुका हूं। और उसकी फ़तह से क़रीब–क़रीब मायूस हो चुका हूं। शम्सुद्दीन रह. ने हस्बे मामुल इन्कसारी का मुज़ाहिरा किया और फ़रमाया कि मैं तो आपका मामुली सा नौकर हूँ। मैं भला इस क़ाबिल कहां। किसी ने शायद आप को ग़लत इत्तिला दी है मगर सुलतान ने कहा कि हुजूर मैं पहले ही बहुत शर्मिन्दा हूं। और ग़लती पर नादिम हूं

मुझे माफ़ फ़रमायें मगर किला की फ़तह के लिए तो दुआ हुज़ूर को करनी ही पड़ेगी। जब सुलतान को इस क़दर खुशामद करते देखा तो वह सोच में पड़ गए और काफ़ी देर सोचने के बाद फ़रमाया कि मेरी कुछ शर्तें है। आप वह मान लें तो मैं दुआ कर दूंगा सुलतान तो किला की फ़तह के लिए बेताब हो ही रहा था उसने कहा कि आप हुक्म फ़रमाईए मैं हर शर्त मानने के लिए तैयार हूं। उन्होंने फ़रमाया कि सबसे पहले तो आप मेरा इस्तीफ़ा मन्जूर करें और मेरी तन्ख़्वाह मुझे दे दें।

मैं यहां से रवाना होकर तक़रीबन तीन कोस के फ़ासले पर जाकर दुआ क़रूंगा आप किले पर हमला कर दें अल्लाह ने चाहा तो किला ज़रूर ब ज़रूर फ़तह हो जाएगा।

सुलतान ने उसी वक़्त उनकी तमाम बातें मान लीं। इस्तीफ़ा मन्जूर किया तन्ख़्वाह दे दी। और निहायत इज्ज़त व एहतराम के साथ रुख़्सत किया। उन्होंने वहां से जा कर तक़रीबन तीन कोस के फ़ासले पर पहुंचने के बाद दुआ फ़रमाई। और चित्तोड़ गढ़ का क़िला फ़तह हो गया। हज़रत शम्सुद्दीन ने फ़ौरन समझ लिया कि आज पीरे तरीक़त हज़रत मख़्दूम अला उद्दीन अली अहमद साबिर पाक का इन्तक़ाल हो गया। क्योंकि आप को उनके इन्तक़ाल का यक़ीन हो गया था। इसी लिए आप फ़ौरन कलियर शरीफ़ के लिए रवाना हो गए। रास्ते में आप को ठोकर लगी आप गिर कर बेहोश हो गए। जब होश में आए तो अपने आप को कलियर शरीफ़ में पाया।

हज़रत साबिर पाक रह. की तजहीज़ व तक्फ़ीन

जब हज़रत शम्सुद्दीन कलियर शरीफ पहुंचे तो आप रह. ने

देखा कि हज़रत साबिरे पाक रह. अलैह का जिस्मे अतहर बे जान पड़ा है और ऐसा मालूम होता है कि अभी–अभी आंख बन्द हुई हैं जंगली शेर आपके क़दमे मुबारक की तरफ़ खड़ा पहरा दे रहा है आप को देख कर शेर ने अपना रास्ता लिया हज़रत शम्सुद्दीन रह. ने अपने पीर व मुर्शिद को गुसल देने का इरादा किया तो गुसल शरीफ़ हो गया। गुसल के बाद कफ़न पहनाने का इरादा किया तकफ़ीन खुद ब खुद हो गई। जब जनाज़ा तदफ़ीन के लिए तैयार हो गया तो हज़रत शम्सुद्दीन को नमाज़े जनाज़ा की फ़िक्र हुई तो क्या देखते हैं कि एक शख़्स नक़ाब पोश बुज़ुर्ग घोड़े पर सवार तशरीफ़ लाते हैं और हज़रत साबिर पाक रह. की नमाज़े जनाज़ा की इमामत करते हैं। और ब वक़्ते सलाम हज़रत शम्सुद्दीन क्या देखते हैं कि अपने दाऐं बाऐं नमाज़े जनाज़ा में लम्बी क़तारें शरीक़ हैं जिनमें फ़रिश्ते आरफ़ीन और शोहदा और रजालुल ग़ैब शामिल हैं। बाद फ़रागत नमाज़े जनाज़ा नक़ाब पौश अपने घोड़े पर सवार होने लगे तो हज़रत शम्सुद्दीन ने घोड़े के पास जाकर उसकी बाग पकड़ ली और नक़ाब पौश से सवाल किया कि अगर कोई मुझसे पूछेगा कि तेरे मुर्शीद की नमाज़े जनाज़ा किसने पढ़ाई तो मैं किया जवाब दूंगा। हज़रत शम्सुद्दीन के इसरार पर नक़ाबपोश ने अपनी नक़ाब उठाई तो हज़रत शम्सुद्दीन ने देखा कि खुद हज़रत साबिर पाक हैं। इसके बाद हज़रत साबिर पाक रह. ने अपने जनाज़ा की तरफ़ इशारा करके फ़रमाया कि वह फ़ना है और अपनी तरफ़ इशारा करके कहा कि यह बक़ा है। इसके बाद आप चले गए और शम्सुद्दीन ने जिस्मे अथर को कब्र में उतारने का इरादा किया तो जिस्में अथर खुद ब खुद क़ब्र अथर में दाख़िल हो गया। और पुर असरार तरीक़े से मिट्टी पड़ कर क़ब्र तैयार हो गई।

रिवायतों से पता चलता हैं कि हज़रत शम्सुद्दीन रह. को आप के मज़ारे मुबारक के पास तीन रोज़ा से ज़्यादा रहने की इजाज़त

नहीं थी। इसलिए आप तीन दिन तक रह कर पानीपत चले गए।

हज़रत साबिर पाक की शान और रुतबा

हज़रत बाबा फ़रीद गंज शक्र रह॰ फ़रमाते हैं कि मेरे सीने का इल्म शेख़ निज़ामुद्दीन बदायूंनी रह॰ और मेरे दिल का इल्म शेख़ अलाउद्दीन अली अहमद साबिर पाक रह॰ को पहुंचा है। बाबा फ़रीद को आप से इन्तहाई मोहब्बत थी। ज़माना–ए–तालीमे ज़ाहिरो बातनी में हज़रत साबिर पाक रह॰ अलै॰ हज़रत बाबा फ़रीद गंज शक्र रह॰ अलै॰ की ख़िदमत में रहे। जबसे आप को ख़िरका–ए–ख़िलाफ़त अता हुआ। कलियर शरीफ़ तशरीफ़ लाने के बाद आप दोबारा पाक पट्टन नहीं गए।

आप हमेशा मुस्तग़रक़ यादे इलाही में रहते थे। बहुत कम होश में आते थे। आप पीरे तरीक़त। वाकिफ़े हक़ीक़त, आरिफ़े कामिल, आलिम व आमिले साहिबे कश्फ़ व करामाते ग़ौसे वक़्त और कुतुबे ज़मां थे। और मक़ामे जलालत इस दरजे का हासिल था कि कोई आप से आंख मिला कर नहीं देख सकता था। आपसे जिस क़दर जलाली तसर्रुफ़ात ज़हूर में आए। ख़ानदाने चिश्तिया में और किसी से ज़ाहिर नहीं हुए।

हज़रत अला उद्दीन अली अहमद साबिर पाक रह॰ के चन्द अक़वाल

1- शरीअत भी क्या चीज़ है जो हुज़ूरी से दरबार में ले आती है।

2- एक दिल में दो को जगह देना मुमकिन नहीं।

3- जाहिल और लालची सूफ़ी शैतान का मसख़रा है।

4- जो फ़क़ीर अमीरों के दरवाज़े पर जाता है वह मक्कार है।

5- रात को सोते वक़्त सोचना चाहिये कि आज कितने नेक काम किए।

6- राहबर में इतनी ताक़त होनी चाहिए कि वह तालिबे हिदायत की कमज़ोरी को अपनी बातनी कूव्वत से दूर करे।

7- अगर बा अज़मत बनना हो तो सादगी और हक़ परस्ती इख़्तियार करो

हज़रत साबिर पाक रह. के जलाल का जमाल में तब्दील होना

बयान किया जाता है कि पहले तो आप हज़रत साबिर पाक रह. के मज़ारे मुबारक में भी बहुत जलाल था। और कोई आदमी वहां नहीं जा सकता था। यहां तक कि कोई परिंदा भी आप के मज़ारे मुबारक पर से उड़कर जाता तो फ़ौरन गिर कर मर जाता था। अगर कोई आपके मज़ारे मुबारक पर हाज़री के लिए जाता भी था तो दूर से ही आग का एक शोला उसकी तरफ़ लपकता और वह डर कर वापस चला जाता। आख़िर एक बहुत खुद्दार सीधा बुज़ुर्ग हज़रत कुतबे आलम अब्दुल कुद्दूस रहमतुल्लाह अलैह गंगोही साबिर पाक के पांचवीं पुश्त में ख़लीफ़ा थे। आप को हज़रते साबिर पाक की ज़ियारत का शौक़ शुरू ही से था। मगर जलाले साबिरी से ख़ाइफ़ होकर सबर फ़रमा लेते थे। और दिल में कहा करते थे कि शान व मदारिज के शैख़ के फ़ैज़ान से उम्मते रसूल स. का महरूम होना बड़ा ही अफ़्सोसनाक अमर है।

बाज़ रिवायतों से पता चलता है कि रदौली शरीफ़ ज़िला बारह बंकी में जहां आप रह. की जाए पैदाइश है वहां अपने दादा पीर हज़रत अब्दुल हक़ रह. के मज़ारे मुबारक पर झाड़ू दिया करते थे। एक दिन सुबह नमाज़ के बाद जबकि आप झाड़ू

देने में मश्गूल थे। एक बुजुर्ग आपके पास से गुज़रे और चलते–चलते फ़रमा गए (अब्दुल कुद्दूस हमारे मज़ार पर भी झाड़ू दिया करो) लेकिन आप यह समझ नहीं पाए कि यह बुज़ुर्ग कौन हैं? हज़रत कुतबे आलम ने मज़ारे शरीफ़ के क़रीब बैठ कर मुराक़बा शुरू किया। तब आपको मालूम हुआ कि वह पीर बुज़ुर्ग हमारे सिलसिला के बानी साहबे विलायत कलियर शरीफ़ हज़रत मख़्दूम अलाउद्दीन अली अहमद साबिर पाक रह॰ थे।

आप ने जल्द ही रदौली शरीफ़ की सुकूनत तर्क कर दी और कलियर शरीफ़ के इरादे से निकले। लेकिन आप ने पहले सहारनपुर के पास एक क़स्बा गंगोह में क़याम फ़रमाया। और बराबर दुआ फ़रमाते रहे कि ऐ साबिर पाक रह॰ आप मेरे सिलसिला के जद्दे अमजद हैं और आप हमको अपने दर की ज़ियारत से मुशर्रफ़ फ़रमाइये। बराबर दुआ करते–करते एक दिन कुबूल हुई और आप कलियर शरीफ़ पापयादा कश्फुलकुबूर का वज़ीफ़ा पढ़ते हुए कलियर शरीफ़ पहुंचे रिवायत है कि आप दस क़दम पर नमाज़े नफ़िल पढ़ते थे। आप बारह कोस की दूरी पर खड़े हो गए और वहां से गिड़गिड़ा कर दुआ करने लगे।

जैसा कि आप पढ़ चुके हैं कि कोई भी बुज़ुर्ग बग़ैर इजाज़त के हज़रत साबिर पाक रह॰ के दरबार में नहीं आ सकता था। अगर आने की कोशिश करता तो एक बरक़े क़हहारी आप रह॰ के मज़ार के इतराफ़ से निकल कर हाइल हो जाती थी। इसी वजह से किसी भी शख़्स को आपकी ज़ियारत नसीब होना मुश्किल थी। जब हज़रत अब्दुल कुद्दूस रह॰ के साथ एसा ही हुआ तो आप ने इस बरक़ को देखते ही फ़ौरन कहा अब्दुल कुद्दूस आप के ख़ादिमों में से है और बहुत ज़्यादा ज़ियारत का मुशताक़ है। इस बात को कहते ही बरक़ ग़ायब हुई। आप कुछ आगे बढ़े तो वह बरक़ फिर पूरे दबदबे और शान के साथ पैदा हुई। हज़रत कुतबे आलम ने फिर आजिज़ी और इन्कसारी के साथ जियारत के शौक़ की ज़्यादती ज़ाहिर की और मलकिया होकर हज़रत साबिर पाक रह॰ की

बरगाह में अर्ज़ किया। हुजूर ने तो मुझे ज़ियारत की इजाज़त दे दी थी। फिर शम्शीरे क़हहारी के हाइल होने का क्या सबब है। हज़रत साबिर पाक ने फ़रमाया कि मर्दो का वार ख़ाली नहीं जाता तू अपनी नफ़ी करे। एक हाथ सीधा और बायां पाओं बढ़ा दे यह शम्शीर वार करके ज़मीन पर गिर जाएगी! आसतीन और तहबन्द का किनारा कट जाएगा तुझ पर किसी क़िस्म का सदमा नहीं होगा। चुनांचे ऐसा ही हुआ। और वह बरक़ ज़मीन पर गिर गई आप उसे लेकर हज़रत साबिर पाक के मज़ारे उक्दस पर हाज़िर हुए।

रिवायत है कि हज़रत साबिर पाक रह॰ की रुहे मुकद्दस मुजस्सम होकर क़ब्र से बरआमद हुई ओर कुतबे आलम से बग़ल गीर हुई और फ़रमाया कि इस वास्ते से कि तू हमारे तरीके में था। इस जगह पहुंच गया वरना किसी दूसरे की किया मजाल और ताक़त थी कि वह इस मक़ाम को पहुंचता।

हज़रत कुतुबे आलम रह॰ ने अर्ज़ किया कि आप की इनायत की मख़्लूक उम्मीदवार है और सब लोग चाहते हैं कि आपकी ज़ियारत से मुर्शरफ़ हों और फ़यूज़ हासिल करें। अगर हुज़ूर करम करके जमाल पर आएं और कैफ़ियते जमाल ज़ाहिर करें। और बरक़ जलाली बन्द हो जाए तो एक आलम आपकी बरकतों से बहरा मन्द हो। और फ़ैज़ हासिल करे। साबिर पाक ने फ़रमाया कि ए अब्दुल कुद्दूस तेरी ख़ातिर मैंने अपनी ज़ात की उस बरक़ को आलमे ला मकां में पोशीदा कर दिया है। और सिफ़ाते जमालिया में थोड़े से मैदान ज़हूर में इस तरह नुमायां किए कि हर ख़ास व आम को आने की इजाज़त बख़्शी। उस वक़्त से हर ख़ास व आम को इस दरग़ाहे पाक में बारियाबी नसीब हुई और फ़ैज़ का सिलसिला जारी हुआ इस तरह आपने हज़रत साबिर पाक रहमतुल्लाह की वफ़ात के दिन यानी 13 रबीउल अव्वल को उर्से शरीफ़ का इनअक़ाद किया। और आप हज़रत साबिरे पाक के पहले सज्जादा नशीन हुए और मौजूदा सिलसिला-ए-सज्जादगान

आप ही से जारी हुआ। इस वक़्त मौजुदा सज्जादा नशीन सय्यद शाह मनसूर अहमद कुद्दूसी मदज़िल्लहूहैं। आप अपने बुज़ुर्गों की रविश क़ायम रखे हुए हैं और हर दिल अज़ीज़ हैं।

शिजरा सज्जादगान

1. हज़रत कुतुबे आलम शैख़ अब्दुल क़द्दूस रह. 1524 ई. से 1548 ई. तक रहे।

2. हज़रत शाह अब्दुल मजीद साहब 1548 ई. से 1582 ई. तक रहे।

3. हज़रत शाह अब्दुस्समद साहब 1582 ई. से 1583 ई. तक रहे।

4. हज़रत शाह फ़तहुल्लाह साहब 1583 ई. से 1612 ई. तक रहे।

5. हज़रत शाह मोहम्मद सादिक़ साहब 1612 ई. से 1640 ई. तक रहे।

6. हज़रत शाह शैख़ मोहम्मद साहब 1640 ई. से 1656 ई. तक रहे।

7. हज़रत शाह शैख़ अहमद उर्फ़ बड़े मियां 1656 ई. से 1710 ई. तक रहे।

8. शाह अली रज़ा साहब 1710 ई. से 1762 ई. तक रहे।

9. शाह शैख़ एहसान अली साहब 1762 ई. से 1800 ई. तक रहे।

10. शाह अली बख़्श साहब 1800 ई. से 1835 ई. तक रहे।

11. शाह अली बख़्श साहब 1835 ई. से 1855 ई. तक रहे।

12. शाह अबुल हसन अली साहब 1855 ई. से 1890 ई. तक रहे।

13. शाह ज़हूर हसन साहब 1890 ई. से 1903 इ. तक रहे।

14. शाह अब्दुर्रहीम शाह साहब 1903 ई. से 1940 ई. तक रहे।

15. शाह नवाब अहमद साहब 1940 ई॰ से 1947 ई॰ तक रहे।
16. शाह एजाज़ अहमद साहब 1947 ई॰ से 1984 ई॰ तक रहे।
17. शाह मनसूर अहमद साहब कुद्दूसी साबरी मौजुदा सज्जादा नशींन

तामीरें गुम्बद व मस्जिद

हज़रत साबिर पाक रह॰ के विसाल के तीन सौ साल बाद हज़रत ख़्वाजा शेख़ अब्दुल कुद्दूस गंगोही ने दसवीं सदी हिज्री में तामीर–ए–गुम्बद व मस्जिद बनवाई थीं। बाद तैयारी गुम्बद आसताना शरीफ़ पर ज़ाइरीन की आमदो रफ़्त का सिलसिला शुरू हो गया। और मुतक़ेदीन को आप के मज़ारे मुबारक पर हाज़री का मोक़ा मिल सका। आज भी रोज़ाना सेंकड़ों की तादाद में लोग आप रह॰ के मज़ार पर हाज़री देते हैं और हर साल 11, 12, 13, 14 रबीउल अव्वल को उर्स के मौके पर बिला तफ़रीक़ मज़हब व मिल्लत हज़ारहा आदमी आप रह॰ के मज़ारे अक्दस पर हाज़री देते हैं। फ़ातिहा पढ़ते हैं। दुआऐं मांगते हैं। मिन्नतें मानते हैं। दीनी व दुनियवी फ़लाह बहबूदी और कामियाबियां हासिल करते हैं।

पुराने गूलर का दरख़्त जिस को साबिर पाक रह॰ पकड़ कर इस्तग़राक़ के आलम में बारह साल खड़े रहे। उस दरख़्त की जगह पर अब संग मरमर से बना हुआ एक चबूतरा बतौर यादगार है। ज़ाइरीन इस पर चिराग़ और मोमबत्ती रौशन करते हैं। इसके दूसरी तरफ़ भी एक गूलर का दरख़्त है। जिसका गूलर मरीज़ों के लिए बहुत मुफ़ीद है और तबर्रुक है और गूलर के क़रीब उत्तर की तरफ़ लंगर ख़ाना जिसमें दोपहर व शाम दोनों वक़्त ग़रीबों, मिस्कीनों और फ़ुक़रा को खाना तक़्सीम किया जाता है।

उर्स मुबारक

कुतुबुल मशाइख़ हज़रत मख़दूम पाक सय्यद अलाउद्दीन अली अहमद, साबिर कलियर रह. मुक़ाम कलियर शरीफ़ तहसील रूड़की, ज़िला : हरिद्वार, यू. पी.

1. मेंहदी डोरी

मेंहदी डोरी रबीउल अव्वल की चांद रात को बाद नमाज़े इशा आसताना–ए–मुबारक से सज्जादा नशीन और उनके ख़्वास मा हज़ारों सिलसिला–ए– चिश्तिया के बुजुर्ग और अक़ीदतमंद हलक़ा करते हुए गाँव कलियर शरीफ़ अपने क़दीम मकान में जाते हैं और वहां से अपने सरों पर मेंहदी डोरी ले कर जूलुस व क़व्वाली और अल्लाहु, अल्लाहु का हलक़ा करते हुए दरगाह साबिर पाक में आते हैं। और अपने दस्ते मुबारक से आसताना आलिया का ताला खोल कर अन्दर जाते हैं। और रस्मे मेंहदी डोरी अदा करते हैं। और दुआ करते हैं जिस में हज़ारों अक़ीदतमंद फ़ैज़याब होते हैं।

बतारीख़ 11,12, 13, 14 रबीउल अव्वल में ये प्रोग्राम मनाये जाते हैं। आप भी इस रूहानी इज्तमाअ में शिरकत फ़रमा कर हज़रत मख़दूमे साबिर पाक के फ़ैज़े रूहानी से मुस्तफ़ीज़ हों।

नक़्शा तकारीब मय औक़ात व मुक़ाम

तारीख़	रोशनी	वक़्ते तक़रीब	मुक़ाम
11 रबीउल अव्वल	छोटी रोशनी	9 बजे सुबह इफ़्तताहे उर्स शरीफ़ अज़ : तिलावते कुरआन शरीफ़ 9 बजे रात क़िराअते कुरआन शरीफ़	अन्दरूने मस्जिद, दरगाह शरीफ़
12 रबीउल अव्वल	छोटी रोशनी	9 बजे रात नातिया मुशायरा गै़र तर्रही– 10 बजे रात ख़त्म शरीफ़ व कव्वाली	अन्दरूने बाग़, दरगाह शरीफ़, महफ़िल खाना
13 रबीउल अव्वल	ख़त्म शरीफ़	10 बजे सुबह कुल शरीफ़ व कव्वाली 4 बजे शाम ख़त्म शरीफ़ व दस्तारबंदी 9 बजे रात ख़त्म शरीफ़ व कव्वाली	महफ़िल खाना, दरगाह शरीफ़, आस्ताना मुबारक अन्दरून बाग़, दरगाह शरीफ़
14 रबीउल अव्वल	गुसल शरीफ़	10 बजे सुबह गुसल शरीफ बाद नमाज़ मग़रिब, ख़त्म शरीफ व कव्वाली। हज़रत ख़्वाजा कुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी	मज़ार मुबारक महफ़िल खाना, दरगाह शरीफ़

तक़रीब बारह माह

साबरी मस्जिद से जानिबे जनूब महफ़िल ख़ाना है जिस में हर जुमेरात, बैने अस्र व मग़रिब ख़त्म फ़ातिहा व दुआ और महफ़िल समाअ़ होती है, जिसमें सज्जादा नशीन सदरे महफ़िल होते हैं, तबर्रुक व दुआ से फ़ैज़याब होते हैं। हर माह चांद की बारह तारीख को बादे नमाज़े इशा महफ़िले मीलाद शरीफ़ मुन्अक़िद होती है। सज्जादा नशीन शरीक होते हैं। बाद ख़त्म फ़ातिहा दुआ होती है। और तबर्रुक तक़सीम होता है। यह सिलसिला सय्यद क़लन्दर साहब मरहूम ने जारी किया था। उम्मीद है कि इन्शा अल्लाह हमेशा चलता रहेगा। मुहम्मद आज़म गुलज़ारी

ख़त्मे ख़्वाजगान

यह ख़त्म ख़्वाजगान रोज़ाना बादे नमाज़ असर दरगाह शरीफ़ साबिर पाक की मस्जिद में पढ़ा जाता है।

दरुदे पाक 11 बार	सूरह अलम नशरह 79 बार	दरुदे पाक 100 बार	सूरह इख़लास 101 बार
सूरह फ़ातिहा 21 बार	या क़ाज़ी उलहाजात 101 बार	या काफ़ीयुल मुहिम्मात 101 बार	या दाफ़े अलबलियात 101 बार
या राफ़ेअुद–दरजात 101 बार	या मुजीबुददावात 101 बार	या अहल्लल मुश्किलात 101 बार	या शाफ़ीयल अमराज़ 101 बार
या मुसब्बिबुल अस्बाब 101 बार	अल्लाहुम्मा या अहकमुल हाकेमीन 101 बार	अल्लाहुम्मा या अर्रहमर्राहेमीन 101 बार	वसाइल बे फ़ज़्लेका 101 बार
	या अलाउद्दीन या ख़्वाजा शम्सुद्दीन		

बेइस्मेही ताला

शिजरा-ए-तय्यबा चिश्तिया साबिरया

फ़ज़्ल कर यारब मुहम्मद मुततुफ़ा के वास्ते
सय्यदे कोनैन शाहे अंबिया के वास्ते
इश्क़ अपना और मुहब्बत मुस्तुफ़ा की दे मुझे
शेरे यज़दाँ शाहे मरदां मुरतुजा के वास्ते
बुग्ज़ व नफ़रत किब्र से दिल पाक कर यारब मेरा
शाहे हसन बसरी इमामुल औलिया के वास्ते
नफ़्स व शैतान किब्र व नख़वत से बचा मुझको खुदा
बादे इरफ़ाँ अ़ब्दे वाहिद मुक़्तदा के वास्ते
सुन्नते खैरुलवरा पर मैं सदा चलता रहू
शाहे फुज़ैल इब्ने अयाज़ अहले बक़ा के वास्ते
दिल मेरा रौशन रहे हुस्ने अज़्ल से ऐ करीम
ख़्वाजा इब्राहीम उधम बे रया के वास्ते
मंज़िले अमन व अमां बे ख़ौफ़ हासिल हो मुझे
शैख़ हुज़ैफ़ा मरअशी शाहे सफ़ा के वास्ते
शिर्क़ और बिदअत से यारब दूर रखना तू मुझे
शहे अमीनुद्दीन हवीरा पेशवा के वास्ते
दीन और दुनिया की यारब सुर्खुरूई दे मुझे
ख़्वाजा मिमशाद उलूशाने खुदा के वास्ते
अपने ख़ासुल ख़ास बन्दों की मुहब्बत दे मुझे
ख़्वाजा अबुल इस्हाक़ शामी पेशवा के वास्ते
दे मदारिजे उख़रवी की शाने यकताई मुझे
ख़्वाजा अबु इस्हाक़ शामी पेशवा के वास्ते

हर तलब जायज़ मेरी आसां कर या रब मेरे
बू मुहम्मद मुसदर इश्के खुदा के वास्ते
काम का मोमिन बना दे तू मुझे या रब मेरे
ख़्वाज़ा यूसुफ़ नासिरुद्दीन वासफ़ा के वास्ते
मुझको हर नुक़सान से यारब मेरे महफ़ूज़ रख
ख़्वाजा मौदूद कुतुबुद्दीन पनाह के वास्ते
सब इमामों के तसद्दुक़ से मुझे आरिफ़ बना
ज़िन्दनी हाजी शरीफ़ पारसा के वास्ते
मैं हूँ नाकारा इलाही ख़िदमते दीन मुझ से ले
ख़्वाजा उस्मान कुतुबुल औलिया के वास्ते
राह में सब्र व रज़ा की रख मुझे साबित क़दम
शाह मुईनुद्दीन हस्न नूरे खुदा के वास्ते
खुद नुमाई के हसद से दूर रख यारब मुझे
ख़्वाजा कुतुबुद्दीन शहीद खुश अदा के वास्ते
दे पनाह अपने ग़ज़ब से मकर शैतान से मुझे
शाह फ़रीदुद्दीन शकर गंज खुदा के वास्ते
बख़्श दे मेरे गुनाह रहमत से अपनी ऐ रहीम
शाह अलाउद्दीन साबिर बा बफ़ा के वास्ते

हज़रत मख़दूम साहिब के सिलसिला का शिजरा साबिरया

हो शरीअ़त और तरीक़त से मुझे वाबस्तगी
शैख़ शम्सुद्दीन तर्क बे रिया के वास्ते
हो जलाले दीने हक़ पेशानी से मेरी अयां
शाह जलालुद्दीन कबीरुल औलिया के वास्ते
दीने हक़ पर रख मुझे साबित क़दम मौला मेरे

शाह अब्दुल हक़ इमामुल अतक़िया के वास्ते
नूरे इरफ़ां से मनुव्वर कर मेरा दिल ऐ ख़ुदा
शैख़ अहमद आरिफ़ राहे हुदा के वास्ते
ऐ ख़ुदा मुझको अता कर हक़ व वातिल में तमीज
शैख़ फ़ारूक़ी मुहम्मद रहनुमा के वास्ते
हो मुजल्ला मेरा सीना नूरे इरफ़ा हो अता
अब्दे कुद्दुसे शहे शिदक़ व शिफ़ा के वास्ते
हों मुनज़्ज़म अहले ईमां दूर सब तफ़रीक़ हो
शाहे नज़ामुद्दीन बलख़ी मुक़तदा के वास्ते

आप के बाद बेशुमार दीगर शाख़े खुल्फ़ा–ए–सिलसिला साबरी के हैं।

तारीख़ वफ़ात

हज़रत ख़्वाजा मख़दूम अलाउद्दीन अली अहमद साबिर रहमतुल्लाह अलैह का विसाल 13 रबीउल अव्वल बरोज़ पंचशुंबा वाक़ेअ हुआ। लफ़्ज़े मख़दूम आप रह॰ की तारीख़े वफ़ात है जिससे अदद 690 हासिल होते है जैसा कि साहबे ख़्यालात उश्शाक़ ने लिखा है कि मौत आम लोगों की और है। और ख़ास लोगों की यानी वली अल्लाह की और है। आम लोगों की जो मौत है वह मौत है और ख़ास लोगों की मौत यानी औलिया अल्लाह की। वक़ाये हक़ है। बस मौत उसी के वास्ते है जो हक़ से दूर है और जो हक़ के नज़दीक़ है उसकी मिसाल ऐसी है जैसे पुल की वुलंदी से गुज़र कर अपने हक़ीक़ी महबूब से जा मिला हो। और यह इश्क़े हक़ीक़ी है।

(हवाला ताजुल औलिया सफ़ा 96)

मुहम्मद आज़म गुलज़ारी

नज़राना

सलामे अक़ीदत

अस्सलाम ऐ हज़रते मखदूम साबिर अस्सलाम
अस्सलाम ऐ वाली–ए–कलियर शहे आली मुक़ाम
सद सलाम ऐ फ़ातिमा जुहरा अली के लाडले
सद सलाम ऐ वारिसे शब्बीर शब्बर सद सलाम
खुद ही फ़ानी खुद ही बाक़ी खुद की मीत खुद इमाम
ऐ बक़ा–ए–बिल्लाह के पुरकैफ़ मन्ज़र सद सलाम
बन्दा और बिन खाए ज़िन्दा, हो न हो कुछ राज़ है
ऐ खुदा के ख़ास बन्दे बन्दा परवर सद सलाम
जब कहा मस्जिद को सजदा कर, तो सजदा कर लिया
सद सलाम हाकिमे मेहराब व मिम्बर सद सलाम
तूर* यह क्या पढ़ दिया है फिर पढ़ो पढ़ते रहो
मेरे आक़ा मेरे मौला मेरे सरवर सद सलाम

सलाम

मखदूम ख़ादिमों का यह अदना सलाम लो
फिर हो नसीब दर यह तुम्हारा सलाम लो
यह अर्स और अर्स में रहमत की बारिशें
चश्म व चिरागे चिश्त की रौशन हक़ीक़तें
दौलत कदे पे आपके हाज़िर हैं ख़िलक़तें
शाह व गदा पसारे हैं सब अपनी झोलियें

चश्मे करम से कर दो इशारा सलाम लो

किस दिल से जाएं छोड़ कर साबिर तेरी गली

कैसे कटेगी हाय यह फुरक़त की वे कली

हम को बहुत रूलाएगी यह साबिरी गली

याद आएगी बिछड़ के बहुत साबिरी गली

यह कह रहा है अश्कों का धारा सलाम लो

रौज़े पे नूरे हक़ की मुसलसल हैं बारिशें

मस्जिद के साएबान में वलियों की हैं सफ़ें

हुजरो में आस पास हैं सब नूरी सूरतें

सब को रूला रही हैं यह रुख़सत की साअतें

कहता है चश्मे नम का नज़ारा सलाम लो

शाने हसन हुसैन हो ज़ुहरा के लाल हो

तुम शाने हैदरी हो सरापा कमाल हो

शेरे खुदा का हू बहू अक्से जलाल हो

यह गंजे चिश्तिया में तुम्हीं बे मिसाल हो

हर रंग बे मिसाल है आक़ा सलाम लो

हम जा रहे हैं दिल नहीं जाता मगर हुज़ूर

होने लगा है शीशा–ए–एहसास चूर चूर

इतने तो बाल व पर करें हमको अता हुज़ूर

एहसास दूरियों का न हो रह के तुम से दूर

मख़दूम तुम हो फ़ैज़ के दरिया सलाम लो

हम गमज़दों को आप के दर से क़रार है

इज़्ज़त का आबरू का यह दारो मदार है

तेरी गली में सब्र व सुकून व क़रार है

साबिर हमें अज़ीज़ तुम्हारा दयार है

इरफ़ान का भी तुम हो सहारा सलाम लो

इमाम साहब का रोज़ा मुबारक

मोज़ा कलियर शरीफ़ की ओर उत्तर में क़रीब आधा फ़रलांग के फ़ासले पर हज़रत इमाम अबु सालेह मुहम्मद शहीद रह. का रौज़ा शरीफ़ स्थित है। और मौजा मज़कूरा की तरफ़ दक्षिण में हज़रत किलकिली शाह साहेब शहीद का रौज़ा शरीफ़ बना हुआ है दोनों नहरों के बीच हज़रत पीर ग़ैब अली शाह मरदान अली शाह शहीद का मज़ार है नीज़ सरज़मीने कलियर शरीफ़ में इधर-उधर बहुत से ख़ाम मज़ारात भी आख़िरी आरामगाह शोहदा के बताये जाते हैं।

मशहूर है कि कई सौ साल पहले सरज़मीने कलियर पर जेहाद हुआ था। जिस में लश्करे मुजाहिदीन की क़ियादत इमाम साहब फ़रमा रहे थे कलियर का क़िला कुफ़्फ़ार के क़ब्ज़े में था। क़िला बड़ी कोशिश के बावजूद फ़तह नही हो रहा था कि हज़रत किलकिली शाह साहब के नारा-ए-तक़बीर से क़िला की दीवारें गिरने लगीं। और तब क़िला में मुजाहिदीन ने दाख़िल होकर क़िला फ़तह कर लिया। फ़तहयाबी के बाद मकीनगाह में छुपे किसी दुश्मन के तीर से हज़रत इमाम साहब और आपकी मुंह बोली बहन बीबी गौहर फ़ातिमा जोकि आप के साथ जंग में शरीक़ थीं शहीद हो गये। ओर हज़रत किलकिली शाह साहब और दीगर कुछ मुजाहिदीन भी शहीद हो गये। शोहदा जिस जगह शहीद हुए वहीं पर मदफ़ून हुए। जिस पर अब आप का रौज़ा मुबारक बना हुआ है। यह चन्द शोहदा अक़लीमे रूहानियत के भी मुजाहिदीन थे. कि शहादत के बाद भी यह दिलों पर हुकूमत कर रहे हैं। और इन के मज़ारात ज़ियारतगाहे ख़ास व आम हैं। किसी हमअसर मोअर्रिख़ के इस जेहाद की तारीख़ तफ़सील से मुरत्तब न करने की

वजह से इन बुजुर्ग शोहदा के हालात परदा–ए–इख़फ़ा में चले गये।

इमाम साहब की क़ब्र रौज़ा की सतह पर एक हुजरा के अन्दर है। जिस पर बुलंद इमारत रौज़ा की तामीर की गई है। हुजरा की दीवार में दरवाज़ा मोजूद था और क़दीम ज़माना में ज़ाएरीन इस दरवाज़ा के ज़रिया ज़ियारत के लिये अन्दर जाया करते थे; मगर काफ़ी मुद्दत हुई वह दरवाज़ा वोसीदा हो गया और अन्दर जाने का रास्ता मसदूद हो गया।

बाबा चरम पोश :– यह मज़ार दरगाह हज़रत साबिर पाक से उत्तर की तरफ़ तक़रीबन डेढ़ फर्लांग के फ़ासले पर नहर के क़रीब वाक़ेअ है। बाबा साहब वली–ए–कामिल थे उन्होंने तमाम उम्र कपड़ा नहीं पहना इसी की वजह से आप चरम पोश के नाम से मशहूर हुए और इसी लड़ाई में शहीद हुए थे।

इब्दाल साहब :– साबिर पाक की दरगाह से उत्तर पश्चिम की तरफ़ इब्दाल साहब का मज़ार है। कई कहते हैं कि यह अलीमुल्लाह इब्दाल का मज़ार है कई कहते हैं किसी इब्दाल का मज़ार है। वल्लाह आलम। लेकिन यह भी साहबे करामत बुजुर्ग हुए हैं।

चिराग़ अली शाह :– साबिर पाक की दरगाह के क़रीब एक गाँव बेड़पुर में इलाही शाह साहब का मज़ार है। जो चिराग़ अली शाह के पीरे कामिल थे। उन्हीं के पास आप का मज़ार है आप भी साहबे करामात थे बेड़पुर से बाद नमाज़ इशराक़ आसताना साबिर पाक पर हाज़िर हुआ करते थे।

मुहम्मद आज़म गुलज़ारी

मनक़बत

मिरी आरज़ू मेरा अरमान साबिर
मिरी ज़िन्दगानी का सामान साबिर
इन्हीं के करम से है जग में उजाला
है नूरे मुहम्मद का फ़ैज़ान साबिर
नहीं मरतबा उस से बढ़कर किसी का
हैं जिस ख़ानए दिल में मेहमान साबिर
तुम्हारा तसव्वुर मिरी बन्दगी है
तुम्हीं काबये दीनो इमान साबिर
हुआ है न होगा कभी ख़ौफ़े महशर
हैं फ़ज़्ले खुदा से निगहबान साबिर
मैं साएल हूँ मैख़ानए साबिरी का
मिरी कैफ़ो मस्ती है उन्वान साबिर

मनक़बत

तुम वारिसे नबी हो दाता करीम साबिर
तुम नायबे अली हो दाता करीम साबिर
मतलूबे चिश्तिया हो मकसूदे आशिकां हो
सिर्रे ख़फ़ी जली हो दाता करीम साबिर
अपनी नमाज़ आकर ख़ुद ही पढ़ाई तुमने
तुम मुन्फ़रिद वली हो दाता करीम साबिर
खुद भूके रह के तुम ने औरों को है खिलाया
आलम में वह सख़ी हो दाता करीम साबिर
इरफ़ाने आगही की मसनद के तुम हो मालिक
मेयारे आशिक़ी हो दाता करीम साबिर
सदक़े में शाहे अज़मत और शम्श के खुदारा
मक़बूले हाजरी हो दाता करीम साबिर
गंजे शकर का सदक़ा बिस्मिल को भी अता हो
तुम तो बड़े ग़नी हो दाता करीम साबिर

❖ ❖❖❖❖❖❖
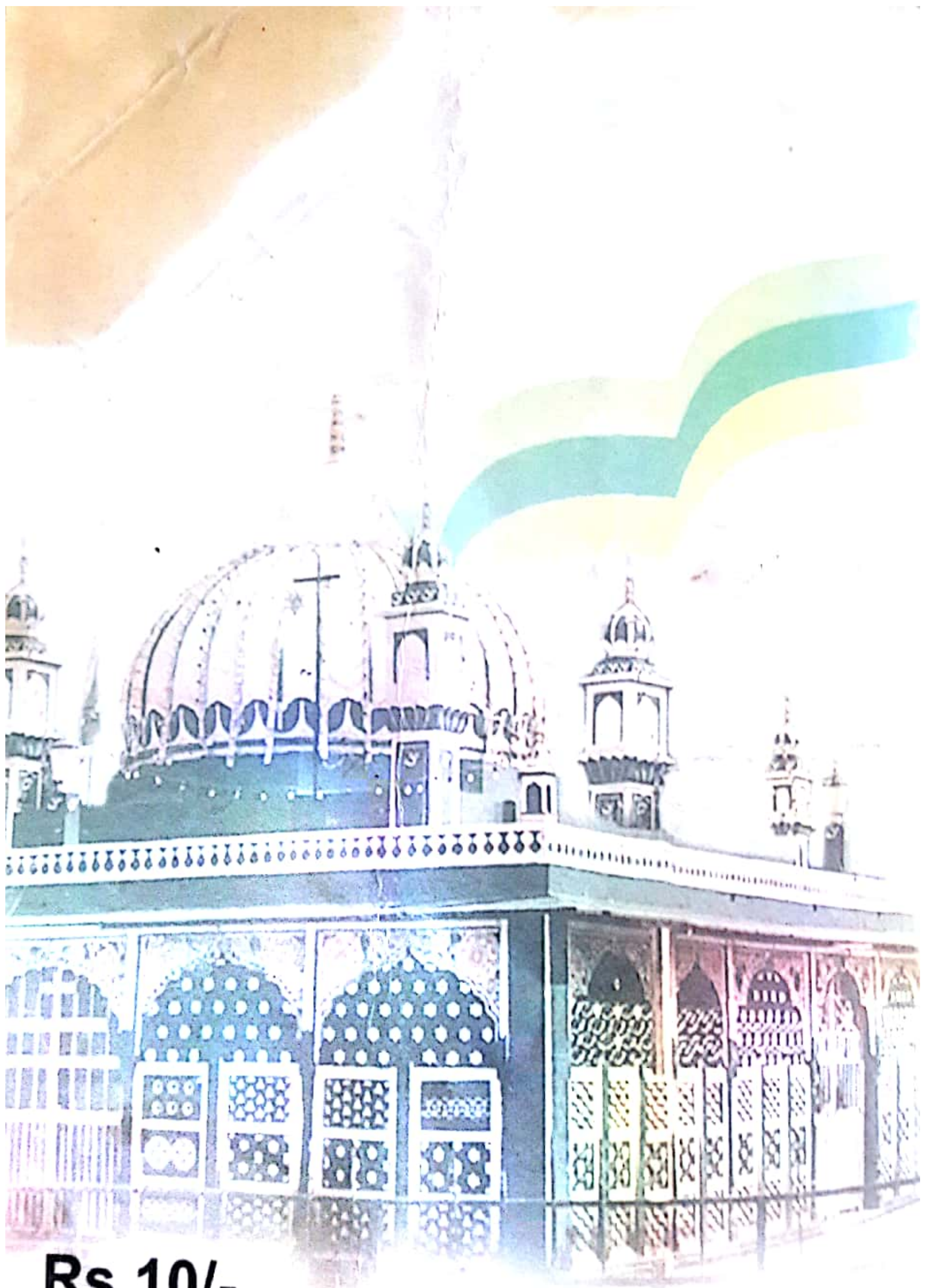
Rs.10/-
KUTUB KHANA GULZARE SABRI
DARGAH HZT. SABIR PAK, PIRAN,
KALIYAR SHARIF